FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अगस्त 2026 ई. / रबीउ़ल अव्वल 1448 हि.

जश्ने विलादत मुबारक हो

- शान व औसाफ़े मुस्तफ़ा का क़ुरआनी तज़्किरा 3
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े ईफ़ाए अ़हद 10
- मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशियां मनाना 27
- ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه 31
- बेटियों को सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरबियत दें 48

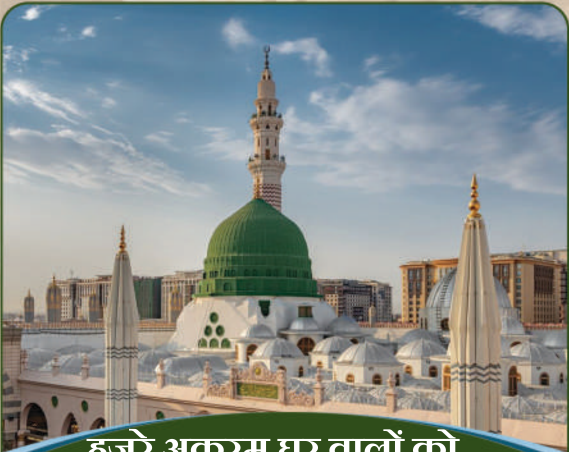

हुज़ूरे अकरम घर वालों को दम फ़रमाते

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर वालों में से कोई बीमार होता तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुअ़व्विज़ात (यानी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते।

(مسلم،ص929،حدیث:5714)

तंगदस्ती से बचने के लिए

रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मुझ पर रोज़ाना **500 बार दुरूद शरीफ़** पढ़ लिया करेगा वोह कभी मोह़ताज न होगा।

(مستطرف،2/508)

कोई चीज़ नुक़सान न पहुंचा सके

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

जो शख़्स सुब्ह़ो शाम तीन तीन मरतबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचा सकेगी :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ
فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْم

(तरजमा : अल्लाह के नाम से जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।) (ترمذی،5/251،حدیث:3399)

(नोट : दुआ के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।)

पहाड़ जितना क़र्ज़

एक मक़रूज़ से मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर जबले सीर (सीर एक पहाड़ का नाम है) जितना दैन (यानी क़र्ज़) होगा तो अल्लाह पाक तुम्हारी त़रफ से अदा कर देगा, तुम यूं कहां करो :

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ
وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

(دیکھیے:ترمذی،5/329،حدیث:3574)

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अगस्त 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो हदीस

शान व औसाफ़े मुस्तफ़ा का क़ुरआनी तज़्किरा 3
जन्नत में रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم की रफ़ाक़त 7

फ़ैज़ाने सीरत

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم का अन्दाज़े ईफ़ाए अहद 10
हिजरते मदीना 14
प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم के शहज़ादे और शहज़ादियां 15

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

क़ब्र पर झन्डियां लगाना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 16

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

हादिसे में हलाक शुदा माल का ज़िम्मेदार कौन ? मअ़ दीगर सुवालात 18

मज़ामीन

1000 साल पुराना ख़त 20
रब से बात कैसे बनेगी ? 23
रसूले रहमत को ख़ुश करने वाले आमाल 25
मीलादुन्नबी की ख़ुशियां मनाना 27

ताजिरों के लिए

अहकामे तिजारत 29

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुज्तबा رضی اللہ عنہ 31
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 34

क़ारेईन के सफ़हात

नए लिखारी 36

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

परेशानियां दूर करें 40
सिर्फ़ लश्कर पर बारिश 42
मीलाद 44
बच्चों को आशिक़े रसूल बनाइए 46

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बेटियों को सुन्नते मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم की तरबियत दें 48
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 50

(क़िस्त : 01)

शान व औसाफ़े मुस्तफ़ा ﷺ का क़ुरआनी तज़्किरा

काएनात की तमाम मख़्लूक़ात में सब से अशरफ़, सब से अफ़्ज़ल और सब से अ़ज़ीम हस्ती ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस है। आप तमाम अम्बिया के सरदार, सारी काएनात के लिए रह़मत और अल्लाह के सब से मह़बूब बन्दे हैं।

क़ुरआने करीम, जो अल्लाह का कलाम और हर दौर के लिए राहनुमाई का सरचश्मा है, उस में बेशुमार मक़ामात पर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस को बयान किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद अपने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तआ़रुफ़ इन अल्फ़ाज़ में कराया कि आप रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं, ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, सिराजे मुनीर हैं और इन्सानियत के लिए उस्वए ह़सना के कामिल मर्कज़ हैं।

इस मज़्मून में क़ुरआने करीम की आयाते मुबारका की रौशनी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात और मक़ामात को यकजा किया गया है। इस का मक़्सद येह है कि हर मुसलमान के दिल में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, अ़ज़मत और अदब मज़ीद रासिख़ हो।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सारी काएनात के लिए रहनुमा हैं

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह करीम ने आप को तमाम इन्सानियत के लिए अपना रसूल बना कर भेजा। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह के आख़िरी और सब से मह़बूब पैग़म्बर हैं जिन की रिसालत पर ईमान लाना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

﴿وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता। (پ22،سبا:28)

﴿قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं। (پ9،الاعراف:158)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अल्लाह दुरूद भेजता है

अल्लाह तआ़ला ख़ुद अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजता है और फ़िरिश्ते भी। आप का ज़िक्र बुलन्द करना अल्लाह की

सुन्नत है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह के सब से महबूब बन्दे हैं।

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّؕ-یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا(۵۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो। (پ22، الاحزاب:56)

﴿وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَؕ(۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया। (پ30، الم نشرح:4)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत फ़र्ज़ है

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत ईमान का लाज़िमी हिस्सा है। जो हुक्म आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दें उसे क़बूल करना और जिस से रोकें उस से रुकना हर मोमिन पर वाजिब है।

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो हुक्म मानों अल्लाह का और हुक्म मानों रसूल का। (پ5، النسآء:59)

﴿وَ مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُۗ-وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْاۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मना फ़रमाएं बाज़ रहो। (پ28، الحشر:7)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त अल्लाह की इताअत है

अल्लाह तआ़ला ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत को अपनी इताअत क़रार दिया है। नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी ही अल्लाह की बन्दगी का अ़मली मज़हर है।

﴿مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना। (پ5، النسآء:80)

﴿وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِیْمًا(۷۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई। (پ22، الاحزاب:71)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी काएनात के लिए रह़मत हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह ने तमाम जहानों के लिए रह़मत बना कर भेजा। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत इन्सानों, जिन्नों, ह़ैवानों और काएनात की हर मख़्लूक़ के लिए है।

﴿وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ(۱۰۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिए। (پ17، الانبیآء:107)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से आख़िरी नबी व रसूल हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं यानी नुबुव्वत का सिल्सिला आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त्म हो गया। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी नहीं आएगा।

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हां अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले। (پ22، الاحزاب:40)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमानते इलाही क़ुरआन के अमीन हैं

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक पर नाज़िल फ़रमाया और उसे उम्मत तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी सोंपी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस अमानत को कमा ह़क़्क़ुहू उम्मत तक पहुंचाया : ﴿وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِیْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَؕ(۱۹۲) نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِیْنُۙ(۱۹۳) عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِیْنَۙ(۱۹۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक येह क़ुरआन रब्बुल आ़लमीन का उतारा हुवा है इसे रूहुल अमीन ले कर उतरा तुम्हारे दिल पर कि तुम डर सुनाओ। (پ19، الشعرآء:192تا194)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्सानियत के लिए अ़मली नमूनए कामिल हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा मुसलमानों के लिए

मुकम्मल नमूनए अ़मल है। ज़िन्दगी के हर शोबे में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी ही कामयाबी की ज़मानत है।

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। (پ21،الاحزاب:21)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अख़्लाक़ के सब से आला मर्कज़ हैं

अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ को अ़ज़ीम क़रार दिया है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमाना ही रहती दुनिया तक के लिए मेयारे ख़ल्क़ हैं।

﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ(۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ूबू बड़ी शान की है। (پ29،القلم:4)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं

मेराज के मौक़अ़ पर अल्लाह ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **"अ़ब्द"** कह कर याद फ़रमाया जो अल्लाह के हां आप के बुलन्द और ख़ास मक़ाम की त़रफ़ इशारा है।

﴿سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए काबा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक। (پ15،بنی اسرآءیل:1)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशीरो नज़ीर हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नेक अ़मल करने वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं और नाफ़रमानों को अ़ज़ाब से डराते हैं।

﴿اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا(۴۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता। (پ22،الاحزاب:45)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दाई इलल्लाह और सिराजे मुनीर हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह की त़रफ़ बुलाने वाले और रौशन चराग़ हैं जो तारीकियों में राह दिखाते हैं और आप तमाम इन्सानियत के लिए हिदायत की रौशनी हैं।

﴿وَّ دَاعِیًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیْرًا(۴۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब। (پ22،الاحزاب:46)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिनों पर मेहरबान और हमारी भलाई के ह़रीस हैं

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिनों के साथ निहायत मेहरबान और रह़ीम हैं। आप को मोमिनों की तक्लीफ़ नागवार गुज़रती है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी भलाई के लिए बेहद ह़रीस हैं।

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ(۱۲۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान। (پ11،التوبۃ:128)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तक्लीफ़ अल्लाह को नापसन्द है

जो लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देते हैं अल्लाह ने उन्हें दुनिया व आख़िरत में मल्ऊन क़रार दिया है।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उस के रसूल को उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया और आख़िरत में। (پ22،الاحزاب:57)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिनों की जानों से भी क़रीब हैं

अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मोमिनों के लिए उन की जानों से ज़ियादा क़रीब और मह़बूब बनाया है।

﴿اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है। (پ21،الاحزاب:6)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ईमान का जुज़्व है

अल्लाह और रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत से बढ़ कर किसी भी चीज़ को अज़ीज़ रखना ईमान के मुनाफ़ी है।

﴿قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِیْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ اﰳقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِیْ سَبِیْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ(۲۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता। (پ10،التوبۃ:24)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी अल्लाह की महब्बत का ज़रीआ है

जो शख़्स अल्लाह की महब्बत हासिल करना चाहता है उसे चाहिए कि नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करे।

﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमांबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा। (پ3،آل عمران:31)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मतों पर गवाह

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से आप की उम्मत को भी ख़ास मक़ाम मिला कि क़यामत में दूसरी उम्मतों की गवाही देंगे और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के ऊपर गवाह व निगेहबान होंगे।

﴿وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَ یَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَیْكُمْ شَهِیْدًاؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल कि तुम लोगों पर गवाह हो और येह रसूल तुम्हारे निगेहबान व गवाह। (پ2،البقرۃ:143)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समरए दुआए इब्राहीमी हैं

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने ख़ानए काबा तामीर करते वक़्त दुआ की थी कि अल्लाह उस क़ौम में एक नबी मबऊस फ़रमा, इस दुआ की क़बूलिय्यत हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत में हुई।

﴿رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِكَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और भेज उन में एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए। (پ1،البقرۃ:129)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिशारते ई़सा हैं

ह़ज़रते ई़सा عَلَیْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद की पहले ही बिशारत दे दी थी।

﴿وَ اِذْ قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब ई़सा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुवा और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएंगे उन का नाम अह़मद है। (پ28،الصف:6)

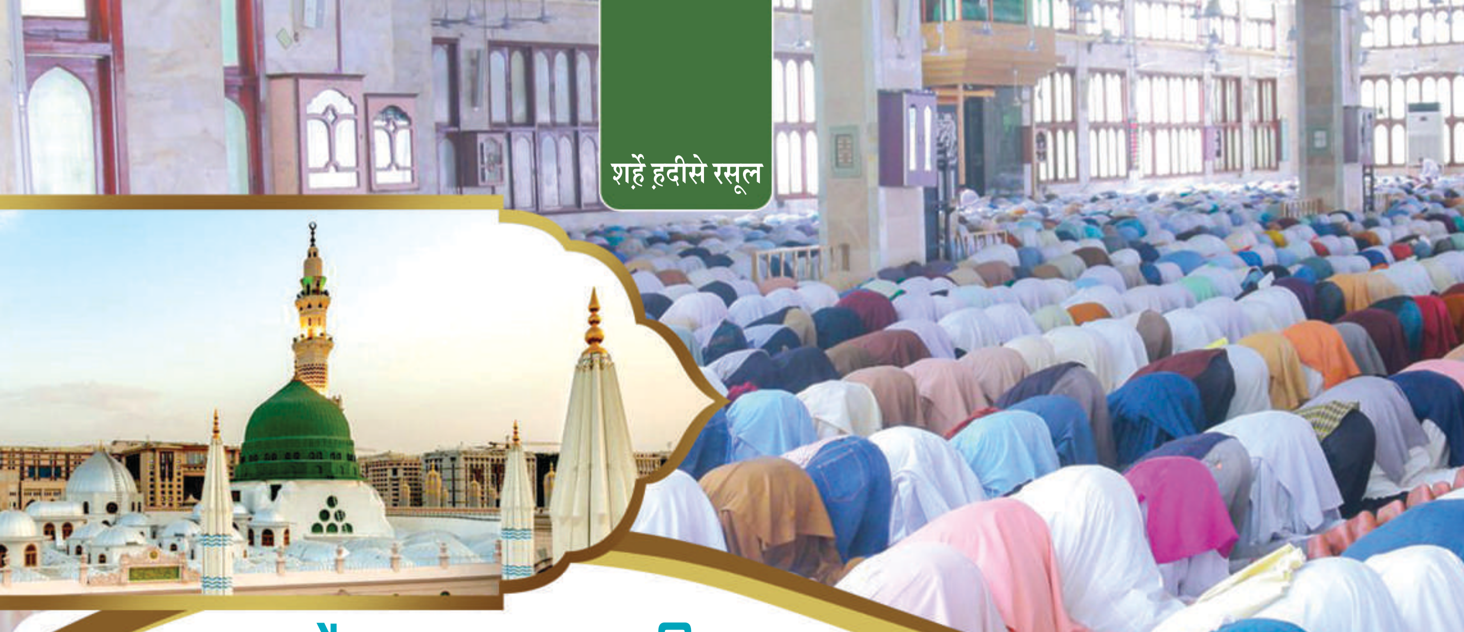

जन्नत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त

عَنْ اَبِیْ فِرَاسٍ رَبِيْعَةَ بْنِ كَعْبٍ الْاَسْلَمِيِّ خَادِمِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمِنْ اَهْلِ الصُّفَّةِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ اَبِيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاٰتِيْهِ بِوَضُوْئِهٖ وَحَاجَتِهٖ فَقَالَ: سَلْنِیْ، فَقُلْتُ: اَسْاَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِی الْجَنَّةِ، فَقَالَ: اَوْ غَيْرَ ذٰلِكَ؟ قُلْتُ هُوَ ذَاكَ قَالَ: فَاَعِنِّیْ عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ۔ (1)

तर्जमा : ह़ज़रते अबू फ़िरास रबीआ बिन कअ़ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ादिम और अहले सुफ़्फ़ा में से थे, फ़रमाते हैं कि मैं रात को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर रहा करता था और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू और दीगर हाजात के लिए पानी लाया करता था, एक दिन आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (के जूदो करम का समुन्दर ठाठें मारने लगा और आप) ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : (ऐ रबीआ़ !) मांग क्या मांगता है ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जन्नत में आप का साथ मांगता हूं। आप ने फ़रमाया : उस के इ़लावा और कुछ ? मैं ने अ़र्ज़ की बस येही। तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तो फिर सज्दों की कसरत कर के अपने मुआ़मले में मेरी मदद करो।

सय्यिदुना रबीआ़ बिन कअ़ब का मुख़्तसर तआ़रुफ़

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कुन्यत अबू फ़िरास है, अस्लमी हैं, अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से थे, क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी हैं, हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़र व ह़ज़र के ख़ास ख़ादिम हैं, 63 हिजरी में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का विसाल हुवा।[2]

रसूलुल्लाह की करम नवाज़ी की वुजूहात

मज़्कूरा ह़दीसे पाक में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : मांगो ! क्या मांगते हो ? शारिह़ीन ने उस की कई वुजूहात बयान फ़रमाई हैं। चुनान्चे

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : मांगो क्या मांगते हो ? यानी मुझ से अपनी ह़ाजत बयान करो।

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : यानी तुम ने जो मेरी ख़िदमत की है उस ख़िदमत के सिले में, मैं तुम्हें तोह़फ़ा दूं। क्यूंकि करीमों की येह शान होती है कि जो उन की ख़िदमत करता है उसे इन्आमात से नवाज़ते हैं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा करीम कोई नहीं।[3]

रसूलुल्लाह के इख़्तियारात की वुस्अत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में इस बात का सराह़तन बयान है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुत़्लक़न फ़रमाया कि “**मांगो जो मांगना है**” इस से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक ने आप को ज़मीनो आस्मान और दुनिया व आख़िरत के तमाम ख़ज़ानों पर ऐसा इख़्तियार अ़त़ा फ़रमाया है कि आप जिसे चाहें जो चाहें अ़त़ा फ़रमा दें इसी वजह से हमारे अइम्मए किराम ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात में इस बात को शुमार फ़रमाया है कि आप को इस बात का इख़्तियार है कि किसी भी शख़्स को किसी भी हुक्म के साथ चाहें ख़ास फ़रमा दें। चुनान्चे ह़ज़रते ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की गवाही को आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो शख़्सों की गवाही के बराबर फ़रमाया। अ़ल्लामा नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शारेअ़ यानी हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आम हुक्म से जिस को चाहें ख़ास फ़रमा दें। जैसे कि आप ने ह़ज़रते अबू बुर्दा बिन नय्यार رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه और उन के इ़लावा बाज़ सह़ाबए किराम के लिए छे माह के बकरे की क़ुरबानी को जाइज़ फ़रमाया। उ़लमाए किराम ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात में इस बात को भी ज़िक्र किया है कि अल्लाह पाक ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जन्नत का मालिक कर दिया है कि आप उस में से जो चाहें जिसे चाहें जितना चाहें अ़त़ा फ़रमाएं।[4]

फ़ज़्लो करम व कमाल के दरिया

लम्आतुत्तन्क़ीह़ में है : आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत़्लक़न (बग़ैर किसी क़ैद व शर्त के) फ़रमाना कि “**मुझ से मांगो।**” इस से मालूम होता है कि अल्लाह पाक ने आप को अपने ख़ज़ानों में से हर उस चीज़ के अ़त़ा करने का इख़्तियार दिया है जो आप अ़त़ा करना चाहें और येह भी इख़्तियार दिया कि आप मांगने वालों में से जिस को चाहें जिस चीज़ के साथ चाहें ख़ास फ़रमा दें, क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ज़्लो करम और कमाल के ऐसे दरिया हैं जिस का कोई साह़िल नहीं है।[5]

तमाम काम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुत़्लक़न फ़रमाया : “**मांगो**” और किसी त़रह़ की कोई क़ैद न लगाई, इस से मालूम होता है कि सब काम रसूलुल्लाह के दस्ते हिम्मत व करामत में हैं जो कुछ चाहते हैं जिस के लिए चाहते हैं अपने परवरदिगार के इज़्न से अ़त़ा फ़रमाते हैं।[6]

जहांबानी अ़त़ा कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़्तारे कुल हैं जिस को जो चाहें अ़त़ा कर दें

मुराफ़क़त का मत़लब

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मुराफ़क़त का माना बयान करते हुए फ़रमाते हैं : यानी मुझे आप जन्नत में अपने साथ रखें, जैसे बादशाह शाही क़ल्ए में अपने ख़ास ख़ादिमों को अपने साथ रखते हैं।[7]

सय्यिदुना रबीआ़ पर बारगाहे रिसालत की अ़त़ाएं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया कि मांगो तो बज़ाहिर ऐसा लगता है कि उन्हों ने फ़क़त़ एक ही चीज़ मांगी और वोह है : “जन्नत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त।” लेकिन उस एक चीज़ के ज़िम्न में ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को बारगाहे रिसालत से बहुत सी चीज़ें अ़त़ा हुईं। चुनान्चे ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने उस जगह हुज़ूर ताजदारे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़स्बे ज़ैल चीज़ें मांगीं : ❁ ज़िन्दगी में ईमान पर इस्तिक़ामत ❁ नेकियों की तौफ़ीक़ ❁ गुनाहों से किनारा कशी ❁ मरते वक़्त ईमान पर ख़ातिमा ❁ क़ब्र के ह़िसाब में कामयाबी ❁ ह़श्र में आमाल की क़बूलिय्यत ❁ पुल सिरात़ से बख़ैरियत गुज़र ❁ जन्नत में रब का फ़ज़्ल व बुलन्दिए मरातिब। येह सब चीज़ें सह़ाबी ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगीं और हुज़ूर ने सह़ाबी को बख़्शीं, लिहाज़ा हम भी हुज़ूर से ईमान,

माल, औलाद, इ़ज़्ज़त, जन्नत, सब कुछ मांग सकते हैं, येह मांगना सुन्नते सह़ाबा है। हुज़ूर के लंगर से येह सब कुछ क़ियामत तक बटता रहेगा और हम भिकारी लेते रहेंगे। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते रबीआ़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने हुज़ूर से हुज़ूर को मांगा मगर चूंकि हुज़ूर जन्नत में ही मिलेंगे, लिहाज़ा जन्नत का भी ज़िक्र कर दिया।[8]

कसरते सुजूद के हुक्म की ह़िक्मतें

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कसरत से सज्दे करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। शारिह़ीने ह़दीस ने इस की कई ह़िक्मतें बयान फ़रमाई हैं। चन्द ह़िक्मतें पेशे ख़िदमत हैं :

सज्दों की कसरत क़ुर्बे इलाही का सबब

इमाम नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (सज्दों की कसरत क़ुर्बे इलाही का सबब है।) इस की ताईद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक दूसरे फ़रमान से भी मिलती है : सज्दे की ह़ालत में बन्दा अपने रब के सब से क़रीब होता है।[9]

सज्दे में इ़ज्ज़ व इन्किसार है

ह़ाफ़िज़ क़ाज़ी अबुल फ़ज़्ल इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सज्दे में इन्तिहा दर्जे की तवाज़ोअ़ और इन्किसार पाई जाती है और सज्दे में बन्दा अल्लाह पाक के लिए अपनी उ़बूदियत को ज़ाहिर करता है क्यूंकि सज्दे में आदमी अपने जिस्म के सब से ज़ियादा क़ाबिले एह़तिराम ह़िस्से यानी अपने चेहरे को एक अदना सी चीज़ जिसे लोग अपने पैरों और जूतों तले रौंदते हैं यानी मिट्टी पर सर रख कर रब तआ़ला की बारगाह में अपनी ह़क़ारत और अपनी ज़ात के अदना होने का इज़्हार करता है।[10]

सज्दा नमाज़ के इ़लावा भी इ़बादत

सज्दों की कसरत के हुक्म की एक वजह येह भी बयान की गई है कि सज्दा बज़ाते ख़ुद एक इ़बादत है जब कि क़ियाम और रुकूअ़ नमाज़ में तो इ़बादत हैं लेकिन नमाज़ के इ़लावा इ़बादत नहीं।[11]

सज्दों की कसरत का माना

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इन सज्दों की अदाएगी इस त़रह़ होगी कि ख़ुदा की रिज़ा ह़ासिल करने के लिए कसरत से नमाज़ अदा की जाए।[12]

अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : सज्दों की कसरत करने से मुराद येह है कि कसरत से नमाज़ें पढ़ कर सज्दे करो, सज्दए तिलावत करो और सज्दए शुक्र बजा लाया करो।[13]

सज्दे में क़ुर्बे इलाही की ज़ियादती :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बन्दे की कोई ख़स्लत अल्लाह पाक को उस से ज़ियादा पसन्द नहीं कि वोह अल्लाह से मुलाक़ात को पसन्द करे और बन्दा ख़ुदाए ज़ुल जलाल की बारगाह में सज्दा करने के इ़लावा किसी घड़ी में उस का ज़ियादा क़ुर्ब नहीं पाता।[14]

सज्दे से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल व अक़्वाल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सज्दा एक अ़ज़ीम इ़बादत है, बुज़ुर्गाने दीन सज्दों की कसरत फ़रमाया करते थे। चन्द बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल पेशे ख़िदमत हैं :

रोज़ाना एक हज़ार सज्दे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि आप हर रोज़ एक हज़ार सज्दे करते थे और लोग उन्हें "सज्जाद" यानी बहुत ज़ियादा सज्दे करने वाला कहते थे।[15]

किसी चीज़ पर अफ़्सोस नहीं होता :

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे अल्लाह पाक के लिए सज्दा करने के सिवा दुनिया की किसी चीज़ के छूटने पर अफ़सोस नहीं होता।[16]

---

(1) مسلم، ص199، حدیث:1094 (2) مراٰۃ المناجیح، 2/83 (3) مرقاۃ المفاتیح، 2/615، تحت الحدیث:896 (4) مرقاۃ المفاتیح، 2/615، تحت الحدیث: 896 ملخصًا (5) لمعات التنقیح، 3/172، تحت الحدیث:896 (6) اشعۃ اللمعات، 1/425 (7) مراٰۃ المناجیح، 2/84 (8) مراٰۃ المناجیح، 2/84 (9) شرح مسلم للنووی، الجزء الرابع، 2/206 ملخصًا (10) اکمال المعلم، 2/403، تحت الحدیث:488 (11) مراٰۃ المناجیح، 2/79 (12) اشعۃ اللمعات، 1/425 (13) مرقاۃ المفاتیح، 2/616، تحت الحدیث:897 (14) کتاب الزھد لابن المبارک، ص94، حدیث:279 (15) صفۃ الصفوۃ، الجزء الثانی، 1/76 (16) شعب الایمان للبیہقی، 3/153، حدیث:3178۔

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم का अन्दाज़े ईफ़ाए अ़हद

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रह़मतुल्लिल आ़लमीन ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा का हर गोशा इन्सानियत के लिए मश्अ़ले राह और हर अदा रुश्दो हिदायत का सरचश्मा है। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ज़ीम व जलील औसाफ़ में से एक नुमायां वस्फ़ **"ईफ़ाए अ़हद"** भी है। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच्चाई, अमानत और ईफ़ाए अ़हद का ऐसा बुलन्द मेयार क़ाइम फ़रमाया कि दोस्त तो दोस्त, दुश्मन भी आप की सदाक़त और वादा निभाने के मोतरिफ़ थे। एलाने नुबुव्वत से क़ब्ल ही आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **"अल सादिक़"** और **"अल अमीन"** के मुबारक अल्क़ाबात से याद किया जाने लगा था और बाद अज़ एलाने नुबुव्वत भी आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर ह़ाल में अपने अ़हद व पैमान की पासदारी फ़रमा कर येह साबित किया कि वादा वफ़ाई अख़्लाक़ी ख़ूबी के साथ साथ ईमाने कामिल और हुस्ने किरदार की रौशन अ़लामत है।

अ़हद और नबवी तालीमात

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वादा ख़िलाफ़ी को संगीन जुर्म क़रार दिया और उस के भयानक नताइज से ख़बरदार किया।

आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا دِيْنَ لِمَنْ لَّا عَهْدَ لَهٗ यानी उस का कोई दीन नहीं जो अपने वादे को पूरा नहीं करता।[1]

निफ़ाक़ की अ़लामात बयान करते हुए आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: اِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَاِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ، وَاِذَا اُؤْتُمِنَ خَانَ तर्जमा : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे तो झूट बोले, जब वादा करे तो ख़िलाफ़वर्ज़ी करे, और जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे।[2]

अ़हद शिक्नी करने वालों के बारे में फ़रमाया : يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعْرَفُ بِهٖ तर्जमा : क़ियामत के दिन हर वादा तोड़ने वाले के लिए एक झन्डा नस्ब किया जाएगा जिस से उसे पहचाना जाएगा।[3]

आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वादा ख़िलाफ़ी के दुनियवी नताइज भी बयान फ़रमाए। चुनान्चे फ़रमाया : مَا نَقَضَ قَوْمٌ الْعَهْدَ قَطُّ اِلَّا كَانَ الْقَتْلُ بَيْنَهُمْ तर्जमा : जो क़ौम भी नक़्ज़े अ़हद की मुर्तकिब हो, उन में ख़ाना जंगी शुरूअ़ हो जाती है।[4]

तारीख़ का मुतालआ करें तो इस ह़दीस की सच्चाई वाज़ेह नज़र आती है। जिन क़ौमों ने आपसी मुआहदों को पांव तले रौंदा, वोह आपस में ही टकराएं और तबाह हुईं।

ईफ़ाए अ़हद के नबवी अन्दाज़

ईफ़ाए अ़हद के जो अन्दाज़ हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में मिलते हैं उन की मिसाल लाना भी नामुम्किन है। आइए ! ज़ैल में रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े ईफ़ाए अ़हद की झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिए :

तीन दिन तक इन्तिज़ार : एलाने नुबुव्वत से पहले का एक वाक़िआ है जो ईफ़ाए अ़हद के सिल्सिले में सोने के हुरूफ़ से लिखने के क़ाबिल है।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल ह़म्सा رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि नुबुव्वत से पहले मैं ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से एक चीज़ ख़रीदने का मुआमला किया। अदाएगी की कुछ रक़म मेरे पास कम पड़ गई तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप यहीं ठहरें, मैं घर से बक़िय्या रक़म ले कर आता हूं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया। लेकिन उधर मैं घर पहुंचा तो मुआमला भूल गया। तीन दिन गुज़र गए। फिर अचानक याद आया तो दौड़ता हुवा वापस आया। देखा तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीन दिन से वहीं इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे ! आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ येह फ़रमाया : ऐ नौजवान ! तुम ने तो मुझ पर बड़ी मशक़्क़त डाल दी, मैं तीन रोज़ से तुम्हारे इन्तिज़ार में यहीं हूं।[5]

इस वाक़िए में सोचने वाले के लिए बहुत कुछ है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नहीं सोचा कि वोह आदमी ख़ुद भूल गया, लिहाज़ा मैं भी चला जाता हूं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नहीं सोचा कि मुआमला छोटा सा है, कोई बात नहीं। बल्कि तीन दिन तक उसी मक़ाम पर इन्तिज़ार फ़रमाते रहे। येह वोह ईफ़ाए अ़हद है जो किसी क़ानून की मजबूरी से नहीं, बल्कि आला अख़्लाक़ का नतीजा था।

क़ुरैश के क़ासिद को वापस भेजा : ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि क़ुरैश ने मुझे अपना क़ासिद बना कर मदीना भेजा। जब मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो मेरे दिल में इस्लाम की मह़ब्बत का चराग़ जल उठा। मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मुझे मुसलमान कर लीजिए, मैं अब क़ुरैश के पास वापस नहीं जाऊंगा।"

येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं न अ़हद शिक्नी करता हूं और न क़ासिदों को क़ैद करता हूं। तुम अभी वापस जाओ।"[6]

अ़हद व पैमान का दाइरा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ईफ़ाए अ़हद का जो दर्स दिया वोह सिर्फ़ मुसलमानों से किए गए वादों तक मह़दूद नहीं था बल्कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से किए हुए वादे भी पूरे किए।

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को मोहमात पर भेजते हुए उन्हें येह तालीम देते :

"अल्लाह के नाम पर, अल्लाह की राह में निकलो, जो अल्लाह का इन्कार करे उस से जंग करो, (मगर) धोका न करो, वादा न तोड़ो, नाक कान न काटो, बच्चे क़त्ल न करो।"[7]

ग़ज़्वए बद्र और वादे की पासदारी : ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि मैं और मेरे वालिद अबू हुसैल رَضِیَ اللهُ عَنْه ग़ज़्वए बद्र में शिर्कत के लिए निकले, मगर रास्ते में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने हमें पकड़ लिया और पूछा कि क्या तुम मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ हो ? हम ने कहा : नहीं, हम तो सिर्फ़ मदीना जा रहे हैं। क़ुरैश ने हम से येह वादा लिया कि हम जंग में शरीक नहीं होंगे, और फिर हमें छोड़ दिया। हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और पूरा वाक़िआ बयान किया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम कुफ़्फ़ार से किया हुवा वादा पूरा करेंगे, और उन के ख़िलाफ़ अल्लाह से मदद मांगेंगे।[8]

आप ﷺ ने दोनों को मदीना वापस भेज दिया और उन्हें जंग में शरीक होने से रोक दिया। ग़ौर कीजिए ! ग़ज़्वए बद्र में तीन सौ तेरह अफ़राद थे जिनके मुक़ाबिल एक हज़ार का लश्कर था। फ़ौजी लिहाज़ से हर तजरिबाकार कमान्डर येही कहता कि येह दो अफ़राद रख लो, मगर आप ﷺ ने उस मौक़अ पर भी वादा को पूरा फ़रमाया।

सुल्हे हुदैबिया और ईफ़ाए अ़हद : 6 हिजरी में सुल्हे हुदैबिया का वाक़िआ पेश आया जो ईफ़ाए अ़हद की तारीख़ में एक बेमिसाल और नाक़ाबिले फ़रामोश बाब है। मुसलमानों ने उ़मरे का इरादा किया था मगर मुश्रिकीने मक्का ने उन्हें रोक लिया, और एक मुआ़हदा तै पाया जिस की शिक़ें बज़ाहिर मुसलमानों के लिए नुक़्सान देह थीं, मगर रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह तआ़ला की हिक्मत पर भरोसा करते हुए उन्हें क़बूल फ़रमाया।

मुआ़हदे की एक अहम शिक़ येह थी कि अगर मक्का से कोई मुसलमान हो कर मदीना आ जाए तो उसे वापस कर दिया जाएगा, जब कि मुसलमानों का कोई फ़र्द मक्का जाए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा। येह शिक़ सुनने में बड़ी तक्लीफ़ देह लगती थी, और सहाबए किराम رضی اللہ عنہم परेशान थे, हत्ता कि हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने भी इस पर अपनी बेचैनी का इज़्हार किया।

अभी मुआ़हदा लिखा ही जा रहा था कि अचानक एक दिल सोज़ मन्ज़र सामने आ गया।

हज़रते अबू जन्दल बिन सुहैल رضی اللہ عنہ, जो क़ुरैश के सरदार सुहैल बिन उ़मर के फ़रज़न्द थे, ज़न्जीरों में जकड़े हुए, ज़ुल्म की जीती जागती तस्वीर बने, लड़खड़ाते क़दमों से किसी त़रह रसूलुल्लाह ﷺ के पास पहुंच गए। वोह मुसलमान हो चुके थे और क़ुरैश ने उन्हें क़ैद कर के अज़िय्यतें दे रखी थीं।

अबू जन्दल के वालिद सुहैल ने फ़ौरी त़ौर पर उन की वापसी का मुत़ालबा किया। हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाया कि अभी तो मुआ़हदा मुकम्मल नहीं हुवा, लेकिन वोह न माने, बिल आख़िर आप ﷺ ने ज़बानी मुआ़हदे की पासदारी करते हे हज़रते अबू जन्दल को वापस कर दिया और फ़रमाया : ऐ अबू जन्दल ! सब्र करो और अल्लाह से अज्र की उम्मीद रखो, बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए और उन लोगों के लिए जो तुम्हारे साथ हैं बहुत जल्द नजात का रास्ता निकाल देगा।[9]

हज़रते अबू बुसैर رضی اللہ عنہ का वाक़िआ : सुल्हे हुदैबिया के बाद हज़रते अबू बुसैर رضی اللہ عنہ मक्का से निकल मदीना पहुंच गए। क़ुरैश ने उन की वापसी का मुत़ालबा किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने मुआ़हदे की पासदारी करते हुए उन्हें वापस कर दिया, ह़ालांकि वोह मुसलमान थे। अबू बुसैर رضی اللہ عنہ ने रास्ते में ख़ुद को आज़ाद कर लिया और बह़्रे अह़मर के साह़िल के क़रीब एक मक़ाम पर रहने लगे। रफ़्ता रफ़्ता वहां उन मुसलमानों की एक जमाअ़त इकठ्ठी हो गई जिन्हें मक्का में ईमान की वजह से अज़िय्यतें दी जा रही थीं और जिन पर मुआ़हदे की पाबन्दी लागू नहीं थी क्यूंकि मुआ़हदा सिर्फ़ उन्ही का था जो रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे।

क़ुरैश के क़ाफ़िले जब उस रास्ते से गुज़रते तो उन के हथ्थे चढ़ जाते, क़ुरैश इस सूरतेह़ाल से इतने तंग आ गए कि ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और दरख़्वास्त की, कि मुआ़हदे की इस शिक़ को ख़त्म कर दिया जाए और उन लोगों को मदीना बुला लिया जाए।[10]

नबिय्ये करीम ﷺ के दुश्मनों का एतिराफ़ : ह़ैरत अंगेज़ पहलू येह है कि आप ﷺ की सीरत के बारे में गवाही सिर्फ़ आप के चाहने वालों ने नहीं दी, बल्कि आप के सख़्त तरीन दुश्मनों ने भी इस ह़क़ीक़त का खुले दिल से एतिराफ़ किया कि आप ﷺ कभी वादा नहीं तोड़ते।

जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्लाम की दावत मुख़्तलिफ़ बादशाहों को ख़ुत़ूत़ के ज़रीए भेजी तो रूम के बादशाह हिरक़ल ने उस मौक़अ पर अबू सुफ़्यान को बुलवाया। अबू सुफ़्यान उस वक़्त

ईमान नहीं लाए थे और मक्का के क़ुरैश के सरकर्दा सरदार थे। हिरक़्ल ने उन से कई सुवाल किए और उन में से एक अहम सुवाल येह था : क्या वोह (यानी नबी) वादों और मुआहदों को तोड़ते हैं ? अबू सुफ़्यान ने जवाब दिया : नहीं। इस पर हिरक़्ल ने कहा : अम्बिया की शान येही होती है कि वोह वादा ख़िलाफ़ी और मुआहदा शिक्नी नहीं करते।[11]

अबू सुफ़्यान ने बाद में एतिराफ़ किया कि उस मौक़अ़ पर अगर मुझे झूट बोलने की शर्म न होती तो मैं आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ कोई न कोई बात कह देता, मगर सच येही था कि जो मैं ने कहा।

इसी त़रह सुल्हे हुदैबिया के अगले साल जब उ़मरतुल क़ज़ा का मौक़अ़ आया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्का तशरीफ़ लाए, तो मक्का के एक सरदार मकरज़ बिन ह़फ़्स ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो कर कहा : आप न बचपन में अ़हद शिक्नी करने वाले जाने गए और न बड़े होने के बाद, बल्कि आप तो हुस्ने सुलूक और वफ़ादारी के ह़वाले से मारूफ़ो मश्हूर हैं।[12]

ईफ़ाए अ़हद और मुआ़शरे की बुन्याद

आज के दौर में अगर हम मुआ़शरे की ख़राबियों का जाइज़ा लें तो उन में से बहुत सी ख़राबियां किसी न किसी त़रह वादा ख़िलाफ़ी से जुड़ी हुई मिलती हैं।

इन्सानी मुआ़शरा एतिमाद पर क़ाइम है। अगर वादे का एतिबार न रहे तो फिर कोई किसी पर भरोसा नहीं करता, कारोबार रुक जाते हैं, तअ़ल्लुक़ात टूट जाते हैं, ख़ानदान बिखर जाते हैं, और पूरी समाजी साख़्त हिल जाती है।

इस ह़क़ीक़त को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चौदह सौ साल पहले बयान फ़रमाया था। आज की ज़बान में कहें तो "Reputation" और "Trust" के बग़ैर कोई निज़ाम नहीं चलता।

आज का मुसलमान और ईफ़ाए अ़हद का बोह़रान

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती और आशिक़ व मुह़िब होने के नाते आज हमें ग़ौर करना चाहिए कि ईफ़ाए अ़हद आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नुमायां तरीन अख़्लाक़े करीमाना में से एक है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ क़ौलन इस की तालीम दी बल्कि अपनी पूरी ह़याते मुबारका में इस का ऐसा अ़मली नमूना पेश फ़रमाया जो क़ियामत तक इन्सानियत के लिए मश्अ़ले राह रहेगा। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वादा पूरा करने को ईमान, दियानत और हुस्ने अख़्लाक़ की अ़लामत क़रार दिया, जब कि वादा ख़िलाफ़ी को निफ़ाक़, बदअ़हदी और अख़्लाक़ी पस्ती की निशानी बताया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस दोस्तों और दुश्मनों सब के नज़्दीक सिद्क़, अमानत और वफ़ादारी का आला तरीन नमूना समझी जाती थीं।

लेकिन एक हम हैं कि मामूली से फ़ायदे, वक़्ती दबाव या ज़ाती सहूलत के लिए अपने वादों को ग़ैर अहम समझ लेते हैं।

अ़स्रे ह़ाज़िर में जब कि वादा ख़िलाफ़ी, बदअ़हदी और एतिमाद शिक्नी मुख़्तलिफ़ मुआ़शरती, तिजारती मसाइल की बुन्यादी वुजूहात बन चुकी हैं, सीरते नबवी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह पहलू हमारे लिए ख़ुसूसी तवज्जोह का त़ालिब है। अगर मुसलमान अपनी इन्फ़िरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना को अपनाते हुए ईफ़ाए अ़हद को अपना शिआ़र बना लें तो बाहमी एतिमाद बह़ाल हो सकता है, मुआ़शरती तअ़ल्लुक़ात मज़बूत हो सकते हैं और एक मिसाली इस्लामी मुआ़शरा वुजूद में आ सकता हैं। लिहाज़ा हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वोह अपने वादों, मुआहदों और ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका को अपना नमूना बनाए और सिद्क़ो वफ़ा के इन औसाफ़ को अपनी ज़िन्दगी का मुस्तक़िल ह़िस्सा बनाए, क्यूंकि दुनिया व आख़िरत की कामयाबी इसी में है।

---

(1)مسند احمد، 4/271، حدیث:12386(2)مسلم، ص50، حدیث:211
(3)بخاری،4/446،حدیث:7111(4)مستدرک للحاکم،2/461،حدیث:2623
(5)ابوداؤد، 4/388، حدیث:4996(6)سنن ابو داؤد، 3/109، حدیث:2758
(7)مسلم،ص738، حدیث نمبر: 4522 (8)مسلم، ص763، حدیث: 4639
(9)مسند احمد، 31/219،218(10)سیرت ابن ہشام، ص434، 435(11)بخاری،
1/10-11، حدیث:7ملتقطاً(12)دلائل النبوة للبیہقی،4/321۔

हिजरते मदीना

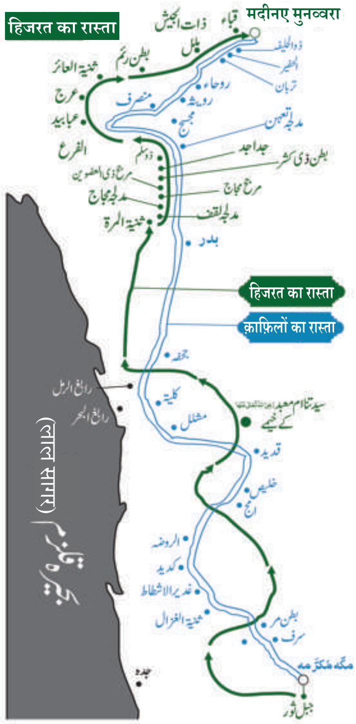

मुश्रिकीने मक्का का ज़ुल्मो सितम बढ़ा तो अहले ईमान बारगाहे रिसालत से इजाज़त पा कर मक्का शरीफ़ से मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए, फिर जब कुफ़्फ़ार ने ग़ल्बए इस्लाम से ख़ौफ़ ज़दा हो कर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल का नापाक मन्सूबा बनाया तो बहुक्मे इलाही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنْه के साथ हिजरत फ़रमाई। (سبل الہدیٰ والرشاد، 3/224-231) कुफ़्फ़ार का सख़्त पहरा था, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم को अपने बिस्तर पर लिटा कर सूरए यासीन की आयात तिलावत करते हुए उन कुफ़्फ़ार के सरों पर मिट्टी डाल कर काशानए अक़्दस से निकल गए, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْه को साथ लिया और मक्कए मुकर्रमा की दाएं जानिब 4 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ ग़ारे सौर में क़ियाम फ़रमाया। (سیرۃ ابن ہشام، ص193)

ग़ारे सौर में जल्वा नुमाई रास्ते में सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنْه कभी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाएं बाएं और कभी आगे पीछे चलते कि कहीं कोई घात लगाने वाला नुक़्सान न पहुंचा दे। चलने में मुबारक उंगलियां दुखने लगीं तो उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कन्धों पर उठा लिया और ग़ार तक ले गए, पहले ख़ुद दाख़िल हुए ताकि कोई मूज़ी जानवर हो तो मुझे तक्लीफ़ पहुंचाए और मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم महफ़ूज़ रहें। (لباب الاحیاء، ص160) मालूम हुवा कि इ़श्क़े रसूल में जान भी क़ुरबान करनी पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। ग़ारे सौर में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र, हज़रते सय्यिदतुना अस्मा और हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللہُ عَنْهُم, ख़बरें पहुंचाने, खाना खिलाने और दूध पिलाने की ख़िदमत बजा लाते रहे। (سیرۃ ابن ہشام، ص194) कुफ़्फ़ार आप की तलाश में ग़ारे सौर पर भी पहुंचे मगर अल्लाह करीम ने महफ़ूज़ रखा जिस का बयान सूरए तौबा में है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपना सकीना (इत़मीनान) उतारा। (پ10، التوبۃ:40) ग़ारे सौर में तीन दिन क़ियाम के बाद सूए मदीना रवाना हुए।

सफ़रे हिजरत और मोजिज़ाते रसूले करीम **(1)** सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنْه की एड़ी पर सांप ने डस लिया तो लुआ़बे दहन लगाने से आराम आ गया **(2)** कुफ़्फ़ार से हिफ़ाज़त की ख़ातिर ग़ार के मुंह पर "उम्मे ग़ैलान" नामी दरख़्त उगा दिया गया, दो कबूतरों ने घोंसला बना लिया और मकड़ी ने जाला तन दिया **(3)** सुराक़ा बिन मालिक (जो बाद में इस्लाम ले आए थे) गिरिफ़्तार करने आए तो उन्हें ज़मीन ने पकड़ लिया और **(4)** उम्मे मअ़बद की लाग़र बकरी को मुबारक हाथ लगाए तो (उस बकरी ने इतना दूध दिया कि) सारे बरतन दूध से भर गए। (السیرۃ النبویۃ، 1/386تا399) यकुम (1st) रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर सफ़रे हिजरत का आग़ाज़ हुवा और 12 रबीउ़ल अव्वल को क़ुबा में पहुंचे, हज़रते कुल्सूम बिन हिदम رَضِیَ اللہُ عَنْه के यहां चन्द दिन क़ियाम फ़रमाया, (السیرۃ الحلبیۃ، 2/72) इसी दौरान मस्जिदे क़ुबा तामीर फ़रमाई जिस की शानो अ़ज़मत पर सूरए तौबा की आयत 108 गवाह है। क़बीलए बनू सालिम में पहला जुमुआ़ अदा फ़रमाया। (फ़तावा रज़विय्या, 8/313) बुरैदा अस्लमी पकड़ने आए मगर महब्बते रसूल के असीर हो गए और अ़र्ज़ की ? या रसूलल्लाह ! मदीना में आप का दाख़िला झन्डे के साथ होगा, फिर उन्हों ने अपने इ़मामे को झन्डा बना लिया। (السیرۃ الحلبیۃ، 2/71)

इस्तिक़बाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहले मदीना रोज़ाना रास्तों पर बैठ कर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिज़ार किया करते थे, जब आप ने सरज़मीने मदीना को शरफ़े क़दम बोसी बख़्शा तो अहले मदीना देखते ही पुकार उठे : اَللّٰهُ اَكْبَرُ جَاءَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ جَاءَ مُحَمَّدٌ यानी रसूले करीम हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ ले आए। औरतों, बच्चों और कनीज़ों ने यूं नात पढ़ी : طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ ـ وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعٍ यानी वदाअ़ की घाटियों से हम पर चांद तुलूअ़ कर आया, दुआ करने वाले जब तक दुआ करें हम पर शुक्र वाजिब है। (سبل الہدیٰ والرشاد، 3/271) नीज़ मर्द, औरतें छतों पर चढ़ गए जब कि बच्चे और ग़ुलाम गलियों में यूं नारे लगाने लगे : يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ـ (مسلم، ص1228، حدیث:7522)

अपना रौज़ा इसी में बनवाया, वाह ! क्या बात है मदीने की
शाह तुम ने मदीना अपनाया, वाह क्या बात है मदीने की
चार सू ख़ूब कैफ़ था छाया, वाह ! क्या बात है मदीने की
मेरे आक़ा मदीने जब आए, बच्चियों ने तराने थे गाए

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 388)

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे और शहज़ादियां عليهم الرضوان

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को 3 शहज़ादे (बेटे) और 4 शहज़ादियां (बेटियां) अ़ता फ़रमाईं, जिन का मुख़्तसर तआ़रुफ़ येह है : **(1) हज़रते सय्यिदुना क़ासिम** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के बत़्ने मुबारक से एलाने नुबुव्वत से पहले पैदा हुए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुन्यत अबुल क़ासिम उन ही के नाम पर है, जम्हूर के क़ौल के मुताबिक़ पांव पर चलना सीख गए थे कि उन का विसाल हो गया। (زرقانی علی المواھب،4/316) **(2) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه एलाने नुबुव्वत से क़ब्ल मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पैदा हुए और बचपन ही में विसाल फ़रमाया, त़य्यिबो त़ाहिर इन्ही का लक़ब है। (ایضاً) **(3) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه येह सब से छोटे शहज़ादे हैं, ज़ुल हिज्जा 8 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा के क़रीब मक़ाम "आ़लिया" में हज़रते सय्यिदतुना मारिया क़िब्त़िया رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के शिकम मुबारक से पैदा हुए और 17 या 18 माह की उ़म्र में 10 रबीउ़ल अव्वल 10 हिजरी को विसाल फ़रमा गए। (مدارج النبوۃ، 2/452-453، سیرت سید الانبیاء، ص593) **(4) हज़रते सय्यिदा ज़ैनब** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا येह सब से बड़ी शहज़ादी हैं, एलाने नुबुव्वत से दस साल पहले मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुईं और हिजरत के आठवें साल विसाल हुवा। (زرقانی علی المواھب، 4/318تا 319 ملتقطاً) **(5) हज़रते सय्यिदा रुक़य्या** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا येह एलाने नुबुव्वत से सात बरस पहले पैदा हुईं, येह हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़ौजियत में थीं कि 19 रमज़ान 2 हिजरी में फ़त्ह़े बद्र के तीसरे दिन बीस साल की उ़म्र में विसाल फ़रमा गईं। (سیرتِ مصطفیٰ، ص694، زرقانی علی المواھب، 4/322 تا 324 ملتقطاً، سیرت سید الانبیاء، ص257) **(6) हज़रते सय्यिदा उम्मे कुल्सूम** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا हज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की वफ़ात के बाद रबीउ़ल अव्वल 3 हिजरी में आप का निकाह़ हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से हुवा, शाबन 9 हिजरी में विसाल फ़रमा गईं। (زرقانی علی المواھب، 4/325تا327 ملتقطاً) **(7) हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा बतूल** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا येह शहंशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से छोटी, प्यारी और लाडली शहज़ादी हैं। उन का निकाह़ 2 हिजरी को मौलाए काएनात हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से हुवा। आज दुनिया भर में जलवा फ़रमा सादाते किराम उन्ही के शहज़ादों इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की औलाद हैं। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुनिया से पर्दा फ़रमाने के 6 माह बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी को आप इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हुईं। (زرقانی علی المواھب، 4/333تا337، مدارج النبوۃ، 2/461 ملتقطاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत फ़ज्र से पहले हुई थी बाद में ?

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का वक़्त फ़ज्र से पहले था या फ़ज्र के बाद ?

जवाब : प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का वक़्त, रात का बिल्कुल आख़िरी हिस्सा और सुब्ह के शुरूअ़ का वक़्त था, यानी रात जा रही थी और सुब्ह आ रही थी और यूं रात को भी नवाज़ा गया और सुब्ह को भी मुशर्रफ़ फ़रमाया गया।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)

2 पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरतुन्नास पढ़ ली तो...

सुवाल : अगर फ़र्ज़ नमाज़ की पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरतुन्नास पढ़ ली तो अब दूसरी रकअ़त में कौन सी सूरत पढ़ेंगे ?

जवाब : दूसरी रकअ़त में भी सूरए फ़ातिह़ा के बाद येही सूरतुन्नास पढ़ेंगे। (देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 6/266, 267 – बहारे शरीअ़त, 1/548 – मदनी मुज़ाकरा, 9 शव्वालुल मुकर्रम 1444 हि.)

3 जश्ने विलादत के झन्डे कब उतारे जाएं ?

सुवाल : जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर हम अपने घरों पर जो झन्डे लगाते हैं उन्हें कब उतारें ?

जवाब : हो सके तो 25 सफ़र शरीफ़ से एक आध दिन पहले लगा दिएं जाए ताकि मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का उ़र्से मुबारक भी इस में आ जाए और फिर बारहवीं शरीफ़ का दिन गुज़ार कर उन झन्डों को उतार कर एहतियात़ के साथ रख लिया जाए ताकि आइन्दा साल काम आ सकें। अगर इन झन्डों को सारा साल लगा रहने देंगे तो फिर उन की त़रफ़ शायद कोई तवज्जोह भी नहीं देगा और हो सकता है येह धूप और हवा की वजह से शहीद हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आएं। (मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)

4 क्या 12 रबीउ़ल अव्वल के दिन काम पर जा सकते हैं ?

सुवाल : अगर ऑफ़िस में कोई अरजन्ट काम हो तो 12 रबीउ़ल अव्वल के दिन काम पर जा सकते हैं ?

जवाब : 12 रबीउ़ल अव्वल और ई़दैन (यानी ई़दुल फ़ित्र और ई़दुल अज़्हा) के दिन मुसलमानों की अक्सरियत छुट्टी करती है, अगर कोई उन दिनों में भी छुट्टी करने के बजाए काम काज करता है तो येह मना नहीं है। हो सकता है जो मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों के पास नौकरियां करते हों वोह उन्हें उन दिनों की छुट्टियां न देते हों और उन्हें काम करना पड़ता हो तो वोह काम कर सकते हैं। यूंही बाज़ मुसलमान भी अपने मुलाज़िमीन को इन दिनों की छुट्टी नहीं देते क्यूंकि ई़दैन और 12 रबीउ़ल अव्वल के दिन उन का काम मज़ीद बढ़ जाता है। जैसे बक़रा ई़द के दिनों में गोश्त फ़रोशों की छुट्टी नहीं होती कि उस दिन येह लोग ज़ियादा मसरूफ़ हो जाते हैं। इसी त़रह़ जानवर बेचने वाले ब्योपारी भी बक़रा ई़द के दिनों में छुट्टी नहीं करते। यूंही ई़दैन में मिठाइयों और जनरल स्टोर्ज़ वालों का काम भी बहुत ज़ियादा होता है तो वोह भी छुट्टी नहीं करते। नीज़ जो लोग बच्चों के

खिलौने वग़ैरा फ़रोख़्त करते हैं उन की भी ईदैन वग़ैरा की छुट्टी नहीं होती कि येह उन की ख़ास कमाई के अय्याम होते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)

5 क़ब्र पर झन्डे या झन्डियां लगाना कैसा ?

सुवाल : मीलाद शरीफ़ के मौक़अ़ पर अपने मर्हूमीन की क़ब्रों पर मीलाद शरीफ़ के झन्डे या झन्डियां लगाना कैसा है ?

जवाब : मेरा मश्वरा येह है कि इस बात को रवाज न दें, मुम्किन है कि झन्डे या झन्डियां बच्चे वग़ैरा उखाड़ कर ले जाएं या फिर बारिश और धूप पड़ने से बोसीदा हो कर उड़ जाएं और यूं उन की बेअदबी हो लिहाज़ा क़ब्र पर मीलाद शरीफ़ के झन्डे लगाने के बजाए पौदे लगाए जाएं कि येह जब तक तरो ताज़ा रहेंगे ज़िक्र करेंगे जिस से मय्यित का दिल बहलेगा। मेरी वालिदए मर्हूमा की क़ब्र पर भी बाज़ लोग झन्डे लगा जाते हैं, बराहेकरम ! वोह ऐसा न करें, हां फूल डालना अच्छा है। (मदनी मुज़ाकरा, 16 रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)

6 मस्जिद का चन्दा किसी को उधार देना कैसा ?

सुवाल : क्या मस्जिद के पैसे किसी को उधार दे सकते हैं ?

जवाब : मस्जिद के पैसे मुतवल्ली न किसी को उधार दे सकता है और न ख़ुद उधार ले सकता है। (देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 16/574) बल्कि वोह मस्जिद ही में इस्तिमाल होंगे। येह भी नहीं हो सकता कि अभी ऐसे ही रखे हुए हैं हम इस्तिमाल कर लेते हैं बाद में मस्जिद के चन्दे में डाल देंगे या फ़ुलां दुख्यारे को दे देते हैं कि वोह वक़्त पर दे देगा वग़ैरा वग़ैरा। अल ग़रज़ किसी त़रह भी मस्जिद का चन्दा न क़र्ज़ दे सकते हैं और न वापसी की निय्यत से भी ख़ुद इस्तिमाल कर सकते हैं। अलबत्ता एडवान्स तनख़्वाह दे सकते हैं लेकिन येह भी उ़र्फ़ के मुत़ाबिक़ दी जाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 29 शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि.)

7 मय्यित को तक्लीफ़ देने से बचाइए

सुवाल : "मुर्दे पर मक्खी बैठ जाए तो उसे पहाड़ के बराबर लगती है" क्या इस त़रह की कोई रिवायत मौजूद है ?

जवाब : येह मैं ने पहली बार सुना है, अब तक न कहीं पढ़ा है और न उ़लमा से सुना है। अलबत्ता मुर्दे के बाल तोड़ना भी मना है कि इस से भी मय्यित को तक्लीफ़ होती है। (देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 9/164) आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में एक ह़दीसे पाक बयान फ़रमाई है : बेशक मुर्दा मुसलमान की हड्डी तोड़ना ऐसा ही है जैसे ज़िन्दा मुसलमान की हड्डी तोड़ना। ((ابوداؤد،3/285،حدیث:3207)- देखिए फ़तावा रज़विय्या, 9/165)

अल्लाह पाक हमें मरने के बाद "पोस्ट मार्टम" से बचाए कि इस में मुर्दे को चीरा फाड़ा जाता है।

इसी त़रह जब बैरूने मुल्क किसी के अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाता है और वोह वहां से मय्यित मंगवाते हैं तो वोह मय्यित को चीर कर उस के अन्दर से ओझड़ी और आंतें वग़ैरा निकाल कर उस में केमीकल भर देते हैं और उस के बाद मय्यित उन तक पहुंचती है। लिहाज़ा मय्यित को तक्लीफ़ देने से बचाइए और जिस मुल्क में इन्तिक़ाल हुवा है उसी में तदफ़ीन होने दीजिए।

(मदनी मुज़ाकरा, 26 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1444 हि.)

8 घर में ख़रगोश पालना

सुवाल : घर में ख़रगोश रखना कैसा ?

जवाब : ख़रगोश ह़लाल जानवर है, इस को घर में रखना, पालना जाइज़ है, लेकिन इन के खाने पीने का ख़ूब ख़याल रखना होगा, घर में बच्चे हैं तो बच्चों से भी इन की ह़िफ़ाज़त करनी होगी ताकि बच्चे इन को कोई तक्लीफ़ न पहुंचाएं।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 शव्वालुल मुकर्रम 1444 हि.)

9 क़ज़ा नमाज़ बैठ कर पढ़ना कैसा ?

सुवाल : क्या क़ज़ा नमाज़ बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

जवाब : क़ज़ा फ़र्ज़ व वित्र वाजिब बिला इजाज़ते शरई़ बैठ कर नहीं पढ़ सकते। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/510 – मदनी मुज़ाकरा, 9 शव्वालुल मुकर्रम 1444 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 मस्जिद की छत पर मीलाद वाला झन्डा लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मस्जिद की छत पर मीलाद वाला झन्डा लगा सकते हैं या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मस्जिद की छत पर मीलाद का झन्डा लगाना फ़ी नफ़्सिही जाइज़ बल्कि बहुत मुस्तह़सन अ़मल है कि फ़ी ज़माना येह दुनिया भर में अहले सुन्नत के दरमियान राइज है, उसे सुन्नियों की मस्जिद होने की अ़लामत समझा जाता और अच्छा गरदाना जाता है, और ह़दीसे पाक के मुताबिक़ जिस काम को मुसलमान अच्छा जानें वोह अल्लाह पाक के नज़्दीक भी अच्छा होता है। नीज़ शरीअ़त में इस की कोई मुमानअ़त नहीं जो कि इस के जवाज़ के लिए काफ़ी है, लिहाज़ा इस में कोई ह़रज नहीं बल्कि येह अहले सुन्नत की शनाख़्त और मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इज़्हार का एक ख़ूबसूरत अन्दाज़ है।

अलमुस्तदरक लिलह़ाकिम, मुस्नद इमाम अह़मद, मुस्नद बज़्ज़ार, अल मुअ़जमुल कबीर लिलत़बरानी वग़ैरा की ह़दीसे पाक में आता है : “ما رأى المسلمون حسنا فهو عند الله حسن” واللفظ للاول

तर्जमा : जिस अ़मल को मुसलमान अच्छा जानते हों, वोह अल्लाह पाक के नज़्दीक भी अच्छा है। (مستدرک للحاکم، 3/84، حدیث:4465)

अ़ल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम इब्ने नुजैम मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (साल वफ़ात : 970 हि. / 1562 ई़) लिखते हैं : “الاصل فی الاشیاء الاباحة حتی یدل الدلیل علی عدم الاباحة”

तर्जमा : तमाम चीज़ों में अस्ल मुबाह होना है, यहां तक कि (किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़) मुबाह न होने की दलील क़ाइम हो जाए। (الاشباہ والنظائر، ص56)

इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (साले वफ़ात : 1340 हि. / 1921 ई़) से मस्जिद की छत पर इस्लामी झन्डा लगाने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा तो आप ने जवाबन फ़रमाया : “(मस्जिद पर झन्डा लगाने में मुज़ाह़मत) का अन्देशा न हो तो फ़ी नफ़्सिही कोई ह़रज नहीं।” (फ़तावा रज़विय्या, 8/122)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़ुरआनी आयात व अह़ादीस पर मुश्तमिल अख़बारात बेवुज़ू पढ़ना छूना और इन को रद्दी में बेचना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि अख़बारात में क़ुरआने करीम की आयात और अह़ादीस व दीनी बातें भी लिखी जाती हैं और लोग उन्हें बे वुज़ू छूते पढ़ते हैं और पढ़ने के बाद इधर उधर रख देते हैं। फिर जब कुछ अख़बारें जमा हो जाती हैं, तो उन्हें रद्दी में बेच देते हैं, इन उमूर के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी एह़तियातों के बारे में रहनुमाई फ़रमा दीजिए।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अख़बार के सफ़ह़ात में जिस जगह क़ुरआनी आयत या इस का तर्जमा लिखा हो, तो सफ़ह़े के इतने ह़िस्से को आयत व तर्जमे वाली जगह से और सफ़ह़े की दूसरी त़रफ़ बिल्कुल पीछे वाली जगह से बेवुज़ू नहीं छू सकते, लेकिन सफ़ह़े के बाक़ी ह़िस्से और बाक़ी अख़बार को बेवुज़ू छू सकते हैं। इस की वजह येह है कि अख़बार के

आयत वाले सफ़हे पर दूसरी तहरीरें भी लिखी होती हैं, सिर्फ़ आयत व तर्जमए क़ुरआन लिखा हुवा नहीं होता बल्कि सफ़हे के भी थोड़े से हिस्से ही पर क़ुरआने पाक की आयत या तर्जमा लिखा होता है, लिहाज़ा सफ़हे के बाक़ी हिस्से और अख़बार को बेवुज़ू छूना, जाइज़ है कि येह क़ुरआनी आयत व तर्जमे को छूना नहीं है, जैसे दीनी मसाइल पर मुश्तमिल किताबों को आयत व तर्जमे वाले हिस्से के इ़लावा जगह से बेवुज़ू छू सकते हैं। नीज़ अख़बार रद्दी में बेचने में इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि उस में लिखी हुई आयात व अह़ादीस, उन के तर्जमे, दीनी मज़ामीन वग़ैरा मुक़द्दस तह़रीरात व अल्फ़ाज़ और अल्लाह पाक, अम्बियाए किराम और फ़रिश्तों عَلَيْهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के नामों वग़ैरा को एह़तियात़ के साथ अलग कर दिया जाए, फिर बाक़ी अख़बार को रद्दी में बेच सकते हैं, जब कि उन अलग किए गए हिस्सों को इकठ्ठा कर के किसी पाक थैले वग़ैरा में डाल कर एह़तियात़ के साथ अदब वाली जगह पर रख दिया जाए या ज़मीन में दफ़्न या गहरे समुन्दर व दरिया या बड़ी नहर में थैले के साथ वज़्नी पत्थर बांध कर ठन्डा कर दिया जाए।

पानी में बहाने और दफ़्न करने का त़रीक़ा :

पानी में बहाने का त़रीक़ा येह है कि काग़ज़ात के थैले वग़ैरा में वज़्नी पत्थर डाल कर उन्हें इस त़रह गहरे दरिया या बीच समुन्दर में डाल दिया जाए कि वोह पानी की तह में चले जाएं और बाहर ऐसी जगह न आ सकें, जहां उन की बेअदबी का ख़त़रा हो। कम गहरे पानी में न डालें, क्यूंकि ऐसा करने से वोह उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते हैं, जिस की वजह से सख़्त बेअदबियां होती हैं। लिहाज़ा पानी में डालने से पहले थैले में चन्द जगह चीरे लगा दें ताकि उस में फ़ौरन पानी भर कर तह में चला जाए। सब से बेहतर येह है कि उन्हें पाक कपड़े में लपेट कर ज़मीन में दफ़्न कर दिया जाए, जिस का त़रीक़ा येह है कि उन के लिए लह़द (बग़ली क़ब्र) बनाएं यानी गढ़ा खोद कर क़िब्ले की जानिब दीवार को इतना खोदें कि सब क़ुरआने पाक और मुक़द्दस औराक़ उस दीवार के सूराख़ में समा जाएं, ताकि उन पर मिट्टी न पड़े और येह भी हो सकता है कि सन्दूक़ नुमा क़ब्र खोदें यानी गढ़ा खोद कर उस में रखें और ऊपर से तख़्ता लगा कर छत बना कर उस छत पर मिट्टी डालें, जैसे मय्यित के लिए क़ब्र बनाई जाती है ताकि उन मुक़द्दस तह़रीरों पर मिट्टी न पड़े, न ही किसी चलने वाले का पांव पड़े येह एह़तियात़ भी शरअ़न ज़रूरी है कि क़ुरआने पाक वग़ैरा मुक़द्दस औराक़ को किसी वक़्फ़ क़ब्रिस्तान में दफ़्न न करें, क्यूंकि क़ब्रिस्तान मुसलमान मुर्दों की तदफ़ीन के लिए वक़्फ़ होते हैं, लिहाज़ा उन में औराक़े मुक़द्दसा दफ़्न करना या इस मक़्सद के लिए कुंवां बनाना, जाइज़ नहीं, क्यूंकि येह वक़्फ़ की ह़ालत को बदलना है, जो कि नाजाइज़ है।

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 ख़रीदो फ़रोख़्त में ट्रांसपोर्ट की वजह से माल हलाक हो जाए तो वोह किस के ज़िम्मे है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक पार्टी ने हम से माल मंगवाया, हम ने उन से माल की क्वालिटी, क़ीमत वग़ैरा सब चीज़ें त़ै कर के अ़क़्द कर लिया, मगर पैमेन्ट एक महीना बाद देना त़ै पाया, उस के बाद हम ने वोह माल पार्टी के कहने पर, उन की त़रफ़ से मुतअ़य्यन कर्दा गुड्ज़ ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सिपुर्द कर दिया, रास्ते में गुड्ज़ ट्रांसपोर्ट वालों को ह़ादिसा पेश आया और वोह माल हलाक हो गया, अब उस पार्टी का कहना है कि वोह माल चूंकि हम तक नहीं पहुंचा, लिहाज़ा हम उस की पैमेन्ट नहीं करेंगे। दरयाफ़्त त़लब अम्र येह है कि हलाक होने वाला माल किस के ज़िम्मे में हलाक हुवा ? इस ह़वाले से रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शरीअ़ते इस्लामिया की रू से ख़रीदो फ़रोख़्त हो जाने के बाद ख़रीदार पर लाज़िम है कि ख़रीदी गई चीज़ की क़ीमत, चीज़ बेचने वाले के सिपुर्द कर दे और बाएअ़ (बेचने वाले शख़्स) पर लाज़िम है कि वोह बेची जाने वाली चीज़ ख़रीदार के सिपुर्द करे। ख़रीदार की त़रफ़ से मुतअ़य्यन कर्दा शख़्स के सिपुर्द करना भी ख़रीदार के ही सिपुर्द करना है कि वोह बत़ौरे वकील क़ब्ज़ा करता है और वकील का क़ब्ज़ा मुअक्किल (अस्ल मालिक) का क़ब्ज़ा शुमार होता है। पूछी गई सूरत में आप ने मबीअ़ (बेची गई चीज़) चूंकि मुश्तरी की मुतअ़य्यन कर्दा ट्रांसपोर्ट कम्पनी के ह़वाले कर दी थी, लिहाज़ा आप की त़रफ से सिपुर्द करना पाया गया। इस के बाद ट्रांसपोर्ट कम्पनी से जो मबीअ़ (बेची गई चीज़) हलाक हुई वोह ख़रीदार की हलाक हुई, लिहाज़ा ख़रीदार पर ह़स्बे वादा उस मबीअ़ (बेची गई चीज़) की पैमेन्ट लाज़िम है।

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1000 साल पुराना ख़त

तक़रीबन 2500 साल पुरानी बात है, मुल्के यमन पर अस्अ़द तुब्बान हिम्यरी नामी बादशाह की हुकूमत थी, चूंकि यमन की ज़बान में बादशाह को तुब्बअ़ कहा जाता था इस लिए तारीख़ में येह बादशाह तुब्बउ़ल अव्वल (यानी पहला बादशाह) और तुब्बअ़ हिम्यरी के नाम से मश्हूर हुवा।

एक मरतबा तुब्बअ़ अपने वज़ीर के साथ सैर पर निकला, तक़रीबन एक लाख 13 हज़ार पैदल चलने वाले और एक लाख 30 हज़ार घुड़ सुवार भी उस के हमराह थे। जिस जिस शहर में येह क़ाफ़िला पहुंचता लोग हैबत और तअ़ज्जुब के मारे बहुत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से पेश आते थे। इस सफ़र के दौरान तुब्बअ़ हर शहर से 10 उ़लमा मुन्तख़ब कर के अपने क़ाफ़िले में शामिल कर रहा था, यूं कई शहरों की सैर के बाद तक़रीबन 4 हज़ार उ़लमा तुब्बअ़ के क़ाफ़िले में जमा हो गए।

जब येह क़ाफ़िला शहरे मक्का पहुंचा तो वहां के लोगों ने इन की ज़रा भी आओ भगत न की, येह देख कर तुब्बअ़ को बहुत ग़ुस्सा आया, उस ने वज़ीर को बुला कर इस की वजह पूछी तो वोह बोला : बादशाह सलामत ! यहां के लोग बहुत अ़जीबो ग़रीब हैं, इस शहर में एक इ़मारत है जिस का नाम काबा है, येह लोग उस इ़मारत में शैत़ान और बुतों को पूजते हैं। येह सब सुन कर तुब्बअ़ ने दिल ही दिल में फ़ैसला किया कि वोह मक्का के आदमियों को क़त्ल कर के औ़रतों और बच्चों को क़ैदी बना लेगा और साथ ही काबा को भी गिरा देगा और फिर काबा का नाम ख़िर्बा (यानी वीरान जगह) हो जाएगा।

ख़ुदा का करना येह हुवा कि येह ख़याल आते ही तुब्बअ़ के सर में शदीद दर्द शुरूअ़ हो गया जब कि उस की आंख, कान, नाक और मुंह से बदबूदार पानी बहने लगा, जिस की वजह से इतनी सड़ान्द पैदा हो गई कि तुब्बअ़ के पास एक लम्ह़ा ठहरना किसी अ़ज़ाब से कम न था। वज़ीर ने त़बीबों (Doctors) से मश्वरा किया मगर कोई भी तुब्बअ़ का इ़लाज दरयाफ़्त न कर सका, त़बीबों का कहना था कि येह कोई आस्मानी मुआ़मला लगता है जिस को टालना हमारे बस की बात नहीं।

बीमारी ने तुब्बअ़ की नींद उड़ा कर रख दी थी कि अचानक रात के एक पहर एक आ़लिम साह़िब वज़ीर के पास आए और राज़दारी से फ़रमाने लगे : अगर बादशाह मेरे सुवाल का सच सच जवाब देने को तय्या हो जाए तो मैं उस का इ़लाज कर सकता हूं। वज़ीर ने येह बात तुब्बअ़ को बताई तो वोह फ़ौरन राज़ी हो गया। चुनान्चे जब आ़लिम साह़िब तुब्बअ़ के पास पहुंच गए जहां उन दोनों के इ़लावा कोई न था तो उन्हों ने पूछा : बादशाह ! सच सच बताओ ! काबा के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारे दिल में क्या बात है ? तुब्बअ़ जो बीमारी की वजह से मुकम्मल निढाल था फ़ौरन अपने बुरे इरादे आ़लिम साह़िब को बयान करने लगा जिसे सुन कर वोह बोले : तुम्हारी बीमारी की वजह येही बुरी निय्यत है, येह बात याद रखो कि काबा का मालिक छुपी बातों को भी जान लेता है, इस लिए अपने दिल से बुरे ख़यालात निकाल दो, इसी में तुम्हारा भला है। तुब्बअ़ मरता क्या न करता, फ़ौरन बुरे इरादों से ताइब हो गया और अभी आ़लिम साह़िब गए भी

न थे कि वोह बिल्कुल ठीक हो गया, आ़लिम साहि़ब की बात अपनी आंखों से दुरुस्त होती देख कर तुब्बअ़ रब्बे पाक पर ईमान ले आया और दीने इब्राहीमी पर क़ाइम हो गया, फिर उस ने काबा की ताज़ीम के लिए 7 ग़िलाफ़ भी तय्यार करवाए, इस से पहले कभी किसी ने काबा पर ग़िलाफ़ नहीं चढ़ाया था। इस के बाद तुब्बअ़ शहरे मक्का के रहने वालों को काबा की हि़फ़ाज़त का हुक्म दे कर मदीने शरीफ़ की त़रफ़ चल पड़ा।

मदीने शरीफ़ में उन दिनों आबादी न थी, पानी के एक चश्मे के इ़लावा यहां ज़िन्दगी के कोई आसार नहीं थे। तुब्बअ़ के क़ाफ़िले ने वहां पहुंच कर उसी चश्मे के पास पड़ाव डाला, यहां क़ियाम के दौरान तक़रीबन 4 हज़ार उ़लमा का आपस में एक मश्वरा हुवा जिस के बाद उन में से 400 उ़लमा ने येह फ़ैसला किया कि वोह जब तक ज़िन्दा हैं किसी क़ीमत पर उस जगह (यानी मदीनए त़य्यिबा की सरज़मीन को) छोड़ कर नहीं जाएंगे चाहे तुब्बअ़ उन्हें जला डाले या मार डाले। तुब्बअ़ को येह बात पता चली तो वोह बहुत ह़ैरान व परेशान हुवा, उस ने वजह मालूम करने के लिए वज़ीर को भेजा तो उ़लमा ने फ़रमाया :

“एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाएंगे जिन का नाम मुह़म्मद होगा, उन की वजह से काबा और मदीनए त़य्यिबा को इ़ज़्ज़त नसीब होगी, वोह ह़क़ के इमाम होंगे, ज़ुलफ़िक़ार नामी उन की तल्वार होगी, ऊंटनी पर सुवारी फ़रमाएंगे, मिम्बर पर खड़े हो कर लाठी हाथ में लिए ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाएंगे, क़ुरआन अ़त़ा कर के उन की शान को और बढ़ाया जाएगा और जब क़ियामत का दिन होगा तो उन के सर पर ह़म्द का ताज और हाथ में ह़म्द का झन्डा होगा। वोह लोगों को “لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه” की दावत देंगे, विलादत शरीफ़ शहरे मक्का में होगी और हिजरत से मदीनए मुनव्वरा को नवाज़ेंगे। वोह शख़्स यक़ीनन सआ़दतमन्द होगा जो उन के ज़माने में होगा और उन पर ईमान लाएगा। इसी लिए हम इस उम्मीद पर यहां मरते दम तक रहना चाहते हैं कि या तो हमें मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार की ह़ाज़िरी नसीब हो जाए या हमारी औलाद इस सआ़दत से बहरामन्द हो जाए।”

वज़ीर की ज़बानी माजरा मालूम होने के बाद तुब्बअ़ ने सोचा : क्यूं न मैं भी इन 400 उ़लमा के साथ एक साल तक यहीं ठहर जाऊं, हो सकता है इस अ़र्से में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हो जाए। इस ख़याल से तुब्बअ़ ने भी वहीं क़ियाम कर लिया और 400 उ़लमा के रहने के लिए 400 घर बनवाए, उन की शादियां करवाईं और ख़ूब मालो दौलत भी दिया।

एक साल इन्तिज़ार के बाद जब तुब्बअ़ का वहां से जाने का इरादा हुवा तो उस ने बारगाहे रिसालत में पेश करने के लिए एक **ख़त़** लिखा जिस का उ़न्वान और मज़्मून कुछ यूं था :

तुब्बउ़ल अव्वल ह़िम्यर बिन वर्दअ़ की त़रफ़ से दो जहां के रब के रसूल और सब से आख़िरी नबी मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़। (येह ख़त़ अल्लाह की अमानत है, जिस को मिले वोह इस के मालिक तक पहुंचाए)।

“या मुह़म्मद ! मैं आप पर और क़ुरआने मजीद पर ईमान लाता हूं, आप के दीन और सुन्नत को अपनाता हूं, आप के और हर चीज़ के रब पर ईमान लाता हूं और जो शरीअ़त आप लाएंगे उसे भी क़बूल करता हूं। अगर मैं आप की सोह़बत का शरफ़ पाने में कामयाब हो गया तो येह मुझ पर रब का इन्आ़म होगा और अगर येह सआ़दत मुझे न मिल सकी तो आप क़ियामत के दिन मुझे भूलियेगा नहीं, रब की बारगाह में मेरी शफ़ाअ़त कीजियेगा, मैं आप का फ़रमां बरदार उम्मती हूं और तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल ही आप की पैरवी करने वाला हूं, मैं आप और आप के वालिद इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दीन पर हूं।”

येह ख़त़ लिखने के बाद तुब्बअ़ ने उस पर अपनी सुनहरी मोहर लगाई जिस पर येह इ़बारत नक़्श थी : “لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَ مِنْۢ بَعْدُؕ وَ يَوْمَىٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ بِنَصْرِ اللّٰهِ” (यानी पहले और बाद हुक्म अल्लाह ही का है और उस दिन ईमान वाले अल्लाह की मदद से ख़ुश होंगे)।

फिर जिन आ़लिम साहि़ब ने तुब्बअ़ की इस्लाह़ की थी तुब्बअ़ ने येह ख़त़ उन्ही के सिपुर्द कर दिया और वसिय्यत की, कि अगर आप की मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात हो तो येह

ख़त उन तक पहुंचाएं और अगर मुलाक़ात न हो तो आप की औलाद या औलाद की औलाद इस ख़त को बहिफ़ाज़त बारगाहे रिसालत में पहुंचाएं। इस के बाद तुब्बअ़ मदीनए मुनव्वरा से हिन्द के शहर ग़ल्सान चला गया और वहां उसका इन्तिक़ाल हो गया।

तुब्बअ़ के इन्तिक़ाल से तक़रीबन 1000 साल बाद मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई, 53 साल मक्कए मुकर्रमा को नवाज़ने के बाद प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत करने का इरादा फ़रमाया। इस हिजरत में मुसलमानों की मदद करने वाले मदीने शरीफ़ के मुसलमानों को **"अन्सार"** कहा जाता है, येह अन्सार उन्ही 400 उ़लमा की औलाद से थे और 1000 साल से नस्ल दर नस्ल ख़त की हिफ़ाज़त करते आ रहे थे। जब अन्सार को हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीना शरीफ़ तशरीफ़ आवरी का इरादा मालूम हुवा तो उन में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, उन्हों ने बारगाहे रिसालत में तुब्बअ़ का ख़त पहुंचाने के लिए आपस में मुशावरत की, इस मजलिसे मुशावरत में सहाबिए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه भी थे जो मक्का से हिजरत कर के यहां पहुंचे थे, उन्हों ने मश्वरा दिया कि किसी बा एतिमाद आदमी को येह ख़त दिया जाए जो बहिफ़ाज़त इसे बारगाहे रिसालत में पहुंचा सके, चुनान्चे वोह ख़त अबू लैला अन्सारी के सिपुर्द कर दिया गया जो बाद में ईमान ले आए थे।

इस के बाद अबू लैला अन्सारी ख़त ले कर मक्का जाने वाले रास्ते पर निकल पड़े, सफ़र के दौरान जब क़बीलए बनू सुलैम पहुंचे तो वहां प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जल्वागर थे, अबू लैला अन्सारी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं पहचानते थे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जैसे ही अबू लैला अन्सारी को देखा तो पुकारा : اَنْتَ اَبُوْ لَيْلٰى؟ यानी तुम अबू लैला हो ? अ़र्ज़ की : जी हां : येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देत हुए इरशाद फ़रमाया : "وَمَعَكَ كِتَابُ تُبَّعٍ الْاَوَّل" तुम्हारे पास ही तुब्बउ़ल अव्वल का ख़त है। इतना सुनना था कि अबू लैला अन्सारी ह़ैरान रह गए और उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन शख़्सियत हैं जो मेरा नाम भी जानते हैं और मेरे यहां आने के मक़्सद से भी वाक़िफ़ हैं ! इस लिए अ़र्ज़ की : आप कौन हैं ? फ़रमाया : मैं ही मुहम्मद हूं, ख़त लाओ ! येह सुन कर अबू लैला अन्सारी ने अपना थैला खोला और तुब्बअ़ बादशाह का तक़रीबन एक हज़ार साल पुराना मोहर लगा हुवा ख़त बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को ख़त पढ़ कर सुनाने का हुक्म दिया, जब ख़त सुना दिया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 3 बार फ़रमाया : "مَرْحَبًا بِالْاَخِ الصَّالِح" यानी नेक भाई को ख़ुश आमदीद ! नेक भाई को ख़ुश आमदीद ! नेक भाई को ख़ुश आमदीद ! इस के बाद आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू लैला अन्सारी को मदीने शरीफ़ की त़रफ़ लौट जाने का हुक्म दे दिया।

अबू लैला अन्सारी जब मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में ख़त पहुंचाने की रूदाद सुनाई जिसे सुन कर लोगों ने अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अबू लैला अन्सारी को इनआ़मो इकराम से नवाज़ा । इस के बाद जब मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا" की सदाओं में मदीना की सरज़मीन पर क़दम रख कर उसे हमेशा के लिए "मदीनए त़य्यिबा" बनाया तो हर क़बीला चाहता था कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के हां क़ियाम फ़रमाएं मगर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी ऊंटनी को छोड़ दो ! जहां ख़ुदा का हुक्म होगा येह वहां रुक जाएगी । चुनान्चे ऊंटनी चलते चलते सहाबिए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के घर के आगे रुक गई, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه उन्ही आ़लिम साहिब की औलाद में से थे जिन्हों ने तुब्बअ़ की इस्लाह़ की थी और आप का मकान वोही मकान था जो तुब्बअ़ ने ख़ास प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए बनवाया था।

(ماخوذ از تاریخ دمشق،11/3تا14)

कर के हिजरत यहां आ गए मुस्त़फ़ा
रौशनी आज घर घर मदीने में है

(वसाइले बख़्शिश, (मुरम्मम), स. 489)

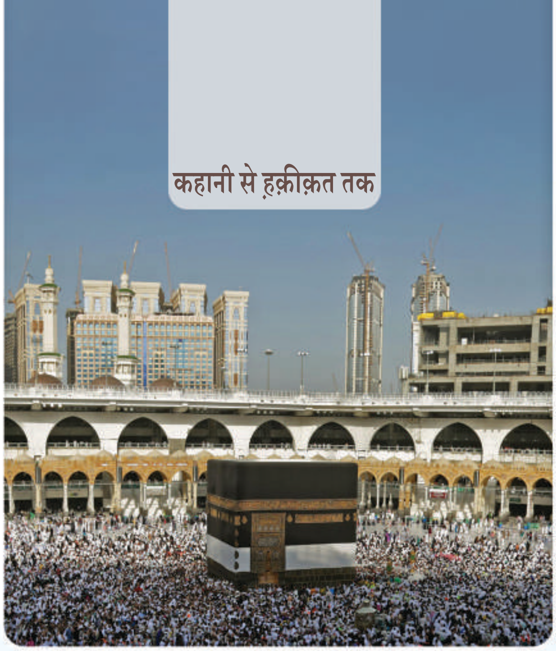

रब से बात कैसे बनेगी ?

किसी महल्ले में एक शख़्स मुसल्सल बेचैनी और बेसुकूनी में मुब्तला था। बज़ाहिर वोह नेक ज़िन्दगी गुज़ारता था, नमाज़, रोज़ा और दीगर इबादात का एहतिमाम भी करता था, मगर उस के बावुजूद दिल को वोह इतमीनान और रूहानी लज़्ज़त नसीब न होती थी जिस की वोह तलाश में था। येह कैफ़ियत उसे अन्दर ही अन्दर बेक़रार किए जा रही थी। एक दिन वोह इसी उल्झन के साथ अपने एक सादा मिज़ाज बावर्ची दोस्त के पास गया और अपना हाले दिल बयान किया। बावर्ची ने बड़े ग़ौर से उस की बात सुनी, मुस्कुराया और कहा : "ज़रा ठहरिए, पहले में एक हन्डिया तय्यार कर लेता हूं, फिर इस मस्अले पर बात करते हैं।" वोह हन्डिया चूल्हे पर रख कर उस में प्याज़, लहसन, टमाटर, नमक, मिर्च और तमाम मसालहे डालने लगा। फिर वोह शख़्स वहीं बैठ कर उस से गुफ़्तगू में मश्ग़ूल हो गया। कुछ देर बाद उस की नज़र चूल्हे पर पड़ी तो वोह हैरान रह गया कि हन्डिया तो रखी है मगर नीचे आग ही नहीं जल रही। ग़ालिबन बावर्ची आग जलाना भूल गया था। उस ने फ़ौरन कहा : आप ने आग क्यूं नहीं जलाई ? बग़ैर आग के हन्डिया कैसे पकेगी ? बावर्ची ने इतमीनान से जवाब दिया : बिल्कुल इसी तरह जैसे इबादत के तमाम ज़ाहिरी आमाल तो हों मगर दिल में तक़्वा और इख़्लास की आग न हो तो दिल की इस्लाह और रूहानी सुकून हासिल नहीं होता। येह बात उस शख़्स के दिल में उतर गई कि अस्ल मस्अला इबादात की कमी नहीं बल्कि दिल की कैफ़ियत और अन्दरूनी इस्लाह की कमी है, जिस के बग़ैर ज़ाहिरी आमाल अपनी हक़ीक़ी तासीर नहीं दिखा पाते।

इस वाक़िए से हासिल होने वाले अहम निकात

1 तक़्वा इबादत की रूह है

रूहानी सुकून के लिए सिर्फ़ ज़ाहिरी आमाल काफ़ी नहीं होते बल्कि दिल में अल्लाह पाक का ख़ौफ़ और परहेज़गारी होना भी ज़रूरी है। इबादत की अस्ल लज़्ज़त तक़्वा से हासिल होती है। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सीनए मुबारक की तरफ़ तीन मरतबा इशारा करते हुए फ़रमाया : तक़्वा यहां है।[1]

2 दिल की इस्लाह अस्ल ज़रूरत है

गुनाह, झूट, ग़ीबत और बदगुमानी दिल को सख़्त कर देते हैं जिस से इबादत में लज़्ज़त ख़त्म होती महसूस होने लगती है। हदीसे पाक में है : "बेशक मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता बन जाता है। अगर वोह तौबा कर ले और गुनाह छोड़ दे और मग़्फ़िरत चाहे तो उस सियाही को मिटा दिया जाता है और अगर वोह गुनाहों में ज़ियादती करे तो वोह सियाही भी बढ़ती जाती है यहां तक कि उस के दिल को ढांप लेती है, येही वोह रान (यानी ज़ंग) है जिस का ज़िक्र अल्लाह पाक ने अपनी किताब में यूं फ़रमाया :"

﴿كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ(۱۴)﴾ [2]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।[3]

3 इख़्लास के बग़ैर अमल बेरूह है

हर अमल की क़बूलिय्यत का दारो मदार निय्यत और इख़्लास पर है। अगर निय्यत ख़ालिस हो तो थोड़ा अमल भी काफ़ी है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ عَنْه से फ़रमाया : "अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ तुम्हें थोड़ा अमल बी काफ़ी होगा।"[4]

4 रूहानी तरक़्क़ी के लिए ख़ुद एहतिसाबी ज़रूरी है

इन्सान को अपने आमाल का जाइज़ा लेते रहना चाहिए ताकि दिल की कैफ़ियत बेहतर होती रहे।

हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ عَنْه ने एक मरतबा अपने ख़ुत्बे में इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम हिसाब लिए जाने से पहले अपने आप का मुहासबा कर लो और (आमाल का) वज़्न किए जाने से पहले अपने (आमाल) का वज़्न कर लो और उस दिन की बड़ी पेशी की तय्यारी कर लो जिस दिन तुम सब (अल्लाह पाक की बारगाह में) इस हाल में पेश किए जाओगे कि तुम में से किसी की कोई पोशीदा हालत छुप न सकेगी।"[5]

5 इबादत में लज़्ज़त के लिए हराम से बचना

हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो लम्बा सफ़र करता है, उस के बाल परागन्दा और बदन ग़ुबार आलूद है और वोह अपने हाथ आस्मान की तरफ़ उठा कर या रब ! या रब ! पुकार रहा है हालांकि उस का खाना हराम, पीना हराम, लिबास हराम, और ग़िज़ा हराम हो फिर उस की दुआ कैसे क़बूल होगी।[6]

अल्लाह पाक हमें सच्ची इबादत, इख़्लास और तक़्वा नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) مسلم، ص1064، حدیث: 6541 (2) پ30، المطففین: 14 (3) ابن ماجہ، 4 / 488، حدیث: 4244 (4) نوادر الاصول، الاصل السادس، 1 / 44، حدیث: 46 (5) مصنف ابن ابی شیبہ، 19 / 143، حدیث: 35600 (6) مسلم، ص393، حدیث: 2346۔

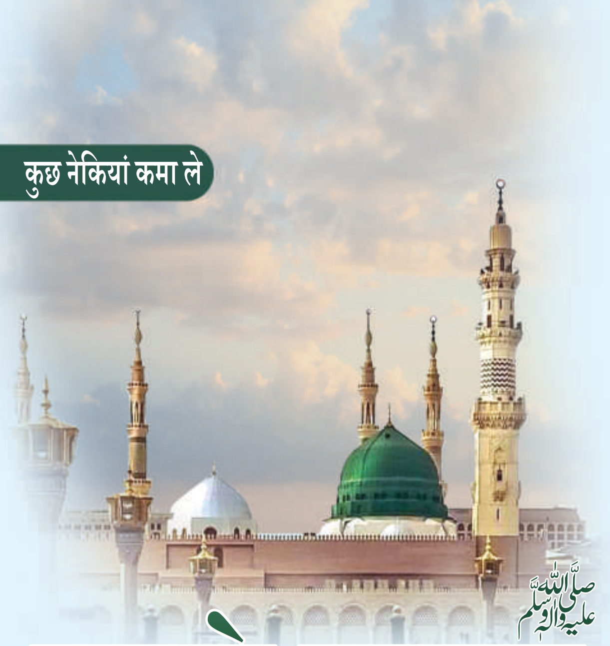

रसूले रह़मत صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم
को ख़ुश करने वाले आमाल

हुज़ूर जाने काएनात صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم हमारे लिए अल्लाह पाक की सब से बड़ी नेमत हैं, अल्लाह पाक की तौफ़ीक़ से नेक आमाल करते हुए हुज़ूर के मुबारक दिल को ख़ुशी पहुंचाना और हुज़ूर की रिज़ा ह़ासिल करना दुनिया व आख़िरत में कामयाबी के साथ साथ जन्नत में जाने का ज़रीआ भी है जब कि इस के बरअ़क्स हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के क़ल्बे मुबारक को तक्लीफ़ पहुंचाना दुनिया व आख़िरत की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब है। आइए ! चन्द अह़ादीसे मुबारका पढ़ते हैं जिन में उन आमाल का ज़िक्र है जिन से क़ल्बे हुज़ूरे पाक صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को ख़ुशी ह़ासिल हुई या हुज़ूर صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने नेक आमाल पर ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया।

किसी की ज़रूरत पूरी करने पर ख़ुशी

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जो मेरे किसी उम्मती की ह़ाजत पूरी करे और उस से उस शख़्स की ख़ुशी चाहता हो तो उस ने मुझे ख़ुश किया और जिस ने मुझे ख़ुश किया उस ने अल्लाह पाक को ख़ुश किया और जिस ने अल्लाह पाक को ख़ुश किया तो अल्लाह पाक उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رحمۃ اللہ علیہ ने इस ह़दीसे पाक की बहुत ही ईमान अफ़रोज़ तशरीह़ बयान फ़रमाई है, फ़रमाते हैं : ख़ुदाए पाक की रिज़ा (व ख़ुशी) सिर्फ़ हुज़ूर (صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم) की रिज़ा (व ख़ुशी) में है, बड़ी से बड़ी नेकी जिस से हुज़ूर राज़ी न हों उस से ख़ुदाए पाक हरगिज़ राज़ी न होगा।[2]

एक रिवायत में यूं भी आया कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मेरे बाद किसी मुसलमान को ख़ुशी पहुंचाए तो उस ने मुझे मेरे मज़ार में ख़ुशी पहुंचाई और जो मुझे मेरे मज़ार में ख़ुशी पहुंचाएगा अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उसे ख़ुशी अ़ता फ़रमाएगा।[3]

उम्मत की नेकियों की ख़बर मिलने पर ख़ुशी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी ह़यात (यानी ज़िन्दगी) तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम गुफ़्तगू करते हो और तुम्हारे लिए गुफ़्तगू की जाती है, और जब मेरा विसाल (यानी इन्तिक़ाल) हो जाएगा तो येह भी तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश होंगे, अगर मैं भलाई देखूंगा तो मैं अल्लाह पाक की ह़म्दो सना (यानी पाकी और तारीफ़) बयान करूंगा, अगर बुराई देखूंगा तो मैं तुम्हारे लिए अल्लाह पाक से मग़फ़िरत त़लब करूंगा।[4]

ह़दीस शरीफ़ के अल्फ़ाज़ **"तुम गुफ़्तगू करते हो और तुम्हारे लिए गुफ़्तगू की जाती है"** से मुराद येह है कि तुम मुझ से वोह बातें बयान करो जो तुम्हें मुश्किल मालूम हों और मैं तुम्हें वोह बातें बताऊं जो तुम्हारी उल्झन दूर कर दें और तुम्हें दर्जए कमाल तक पहुंचा दें।[5]

ऐ आशिक़ाने रसूल ! नेकी देख कर अल्लाह पाक की ह़म्दो सना और तारीफ़ बयान करना हुज़ूर صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के ख़ुश होने की दलील है, जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा समहूदी رحمۃ اللہ علیہ भी मुस्नद

बज़्ज़ार की रिवायत नक़्ल करने के बाद फ़रमाते हैं : बेशक हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के नेक आमाल देख कर ख़ुश होते और बुरे आमाल देखकर ग़मगीन होते हैं।[6]

एक रिवायत में है कि ग़मज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमेरात को अल्लाह पाक के हुज़ूर आमाल पेश होते हैं और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और मां बाप के सामने हर जुमुआ को। वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई व ताबिश (यानी चमक दमक) बढ़ जाती है, तो अल्लाह पाक से डरो और अपने वफ़ात पाने वालों को अपने गुनाहों से रंज (यानी दुख, तक्लीफ़) न पहुंचाओ।[7]

सदक़ा व ख़ैरात पर ख़ुशी

सहाबिए रसूल हज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हम सुब्ह सवेरे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में क़बीलए मुज़िर के लोग आए जो लिबास की कमी के बाइस कम्बल लपेटे हुए थे और तल्वारें गले में डाले हुए थे, उन का फ़ाक़ा (यानी तंगदस्ती) देख कर हुज़ूर अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक चेहरे का रंग तब्दील हो गया, आप अन्दर तशरीफ़ ले गए फिर बाहर तशरीफ़ लाए, हज़रते बिलाल को हुक्म दिया, उन्हों ने अज़ान व तक्बीर (यानी इक़ामत) कही फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी और ख़ुत्बा दिया और उस में येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ بَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا(۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्दो औरत फैला दिए और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।[8]

﴿اتَّقُوا اللّٰهَ وَ لْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ(۱۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।[9]

फिर इरशाद फ़रमाया : इन्सान अपने दीनार दिरहम अपने कपड़े गन्दुम व जौ के साअ में से ख़ैरात करे हत्ता कि फ़रमाया : खजूर की फांक या टुकड़ा ही सही। रावी फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी थैली लाए जिस के वज़्न से उन का हाथ थका जाता था बल्कि थक ही गया फिर लोगों का तांता बन्ध गया हत्ता कि मैं ने खाने और कपड़े के ढेर देखे, पस मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर देखा कि ख़ुशी से चमक रहा है गोया सोने की डली है।[10]

शर्ह : (नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर येह चमक) फ़ुक़रा की हाजत रवाई और सहाबा की ख़ैरात पर ख़ुशी की वजह से (थी। और येह भी) मालूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की नेकियों पर ख़ुश होते हैं और जो अल्लाह और रसूल को राज़ी करना चाहे वोह फ़क़ीरों की हाजत पूरी करे।[11]

ऐ आशिक़ाने रसूल ! रिज़ाए इलाही को पेशे नज़र रखते हुए और उख़रवी फ़ायदे के हुसूल के लिए अगर कोई शख़्स अपने पीरो मुर्शिद या अपने मां बाप या अपने उस्ताज़ वग़ैरा को ख़ुशी पहुंचाने के लिए कोई काम करे तो येह इख़्लास के मुनाफ़ी नहीं है और येह ऐसा अमल है जिस से हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी ख़ुशी हासिल होती है।

अल्लाह पाक हमें अपने आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश करने वाले आमाल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)شعب الایمان،6/115، حدیث:7653(2)مراٰۃ المناجیح،6/581(3)جمع الجوامع، 7/172، حدیث:22063(4)مسند بزار، 5/308، حدیث:1925 (5)تیسیر، 1/502(6)وفاء الوفاء باخبار دار المصطفیٰ، 4/1354)(الحاوی، 2/180 (7)نَوادِرُ الاصول،2/260(8)پ4، النساء:1(9)پ28، الحشر:18(10)مسلم، 394،حدیث:2351(11)مراٰۃُ المناجیح،1/196۔

मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशियां मनाना

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! दीने इस्लाम की तालीमात का एक नुमायां वस्फ़ येह है कि इस के हर शोबे में हमें क़ुरआनो सुन्नत के साथ साथ सलफ़ सालिहीन, औलियाए कामिलीन और अकाबिरीने उम्मत की अमली व इल्मी रहनुमाई भी मुयस्सर है। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या अपने इल्म, अमल, तक़्वा और इख़्लास के सबब उम्मत के लिए मीनारए नूर की हैसियत रखते हैं। उन के इरशादात व मल्फ़ूज़ात और इल्मी तजरिबात न सिर्फ़ दीनी मसाइल व अहकाम की तफ़्हीम में मददगार हैं बल्कि इन्सान की फ़िक्री, अख़्लाक़ी, रूहानी और अमली तरबियत का भी मुअस्सर ज़रीआ हैं। माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के इस सिल्सिले में मुख़्तलिफ़ दीनी, अख़्लाक़ी और मुआशरती मौज़ूआत को अकाबिरीने उम्मत के तनाज़ुर में पेश किया जाएगा ताकि क़ारेईन इन मुबारक हस्तियों के अफ़्कार व तालीमात से इल्मो अमल को मज़ीद निखार सकें। मीलाद शरीफ के मौक़ेअ पर ख़ुशी मनाना अगर्चे अहादीस व तफ़ासीर में भी बयान हुवा है अलबत्ता आइए ! आज जानते हैं कि बुज़ुर्गों की नज़र में मीलादे मुस्तफ़ा मनाने की क्या बरकात हैं !

ज़िक्रे विलादते मुस्तफ़ा के वक़्त क़ियाम ताज़ीमे मुस्तफ़ा है

शैख़ुल इस्लाम अल्लामा सय्यिद अहमद बिन ज़ैद बिन दहलान मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शबे विलादत में ख़ुशी मनाना, मौलिद शरीफ़ पढ़ना, ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़ियाम करना, खाना खिलाना और वोह तमाम अच्छे काम जो उस रात लोगों में राइज हैं, येह सब काम हुज़ूरे अकरम की ताज़ीम में शामिल हैं।[1]

ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़ियाम मुस्तहसन है

आरिफ़ बिल्लाह हज़रते मौलाना सय्यिद जाफ़र बरजंजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बेशक नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़ियाम करना उन इमामों ने मुस्तहसन (अच्छा, कारे सवाब) समझा है जो साहिबे रिवाया व दराया थे तो शादमानी है उस ख़ुशनसीब के लिए जिस का मक़्सूद व मुद्दआ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम है।[2]

ज़िक्रे विलादत शरीफ़ मूजिबे ख़ैरात है

हज़रते शैख़ इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इस में तो किसी को कलाम ही नहीं कि नफ़्से ज़िक्रे विलादत शरीफ़, हज़रते फ़ख़्रे आदम, सरवरे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मूजिबे ख़ैरात व बरकाते दुन्यवी व उख़रवी है और मशरब फ़क़ीर का येह है कि महफ़िले मौलिद में शरीक होता हूं, बल्कि ज़रीअए बरकात समझ कर हर साल मुन्अक़िद करता हूं और क़ियाम में लुत्फ़ व लज़्ज़त पाता हूं।[3]

रब की ख़ुशनूदी की तरफ़ सबक़त

फ़क़ीह मुहद्दिस मौलाना उस्मान बिन हसन दम्याती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने रिसाले इसबाते क़ियाम में फ़रमाते हैं : मौलिद शरीफ़ पढ़ने के दौरान हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ के ज़िक्र के

वक़्त ताज़ीमन खड़ा होना बेशक मुस्तहब व मुस्तहसन है जिस के क़ाइल को सवाबे कसीर व फ़ज़्ले कबीर हासिल होगा कि वोह ताज़ीम है और कैसी है ताज़ीम उन नबिय्ये करीम साहिबे ख़ुल्क़े अज़ीम علیہ الصلوٰۃ والتسلیم की जिन की बरकत से अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ हमें ज़ुल्माते कुफ़्र से नूरे ईमान की तरफ़ लाया और उन के सबब हमें दोज़ख़ जहल से बचा कर बिहिश्त मारिफ़त व यक़ीन में दाख़िल फ़रमाया तो हुज़ूरे अक़्दस صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم की ताज़ीम में ख़ुशनूदिए रब्बुल आलमीन की तरफ़ दौड़ना है।[4]

इमाम इब्नुल जज़री رحمۃُ اللہِ علیہ फ़रमाते हैं : अबू लहब जैसे बदतर काफ़िर की क़ुरआन में मज़म्मत आई है मगर इस के बावुजूद हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم की विलादत की रात ख़ुशी मनाने की वजह से जब उसे जहन्नम में किसी क़दर तख़्फ़ीफ़े अ़ज़ाब नसीब हुई तो फिर उस मुसलमान के क्या कहने जो आप की विलादत पर ख़ुश होता है, और अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ आप صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم की महब्बत में ख़र्च करता है । मेरी ज़िन्दगानी की क़सम ! अल्लाह करीम की तरफ़ से उस का बदला येही होगा कि वोह अपने वसीअ़ फ़ज़्ल से उसे जन्नते नईम में दाख़िल फ़रमाएगा । अहले इस्लाम ज़माने से आप صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم के माहे विलादत में ख़ुशी मनाते रहे हैं, दावतें और ज़ियाफ़तें करते हैं, उस की रातों में सदक़ात व ख़ैरात करते हैं, ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार करते हैं, नेकियों और भलाइयों की कसरत करते हैं और हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم का मीलादे मुबारक पढ़ते और विलादत का तज़्किरा करते हैं । चुनान्चे उन पर हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم की बरकात के बाइ़स फ़ज़्लो इनायात का इज़्हार होता है।[5]

उम्मत गुमराही पर मुत्तफ़िक़ नहीं हो सकती

ख़लीले मिल्लत मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती رحمۃُ اللہِ علیہ फ़रमाते हैं : क़ियाम वक़्ते ज़िक्रे विलादत हुज़ूर ख़ैरुल अनाम علیہ وعلی آلہ افضل الصلوٰۃ والسلام , सदहा साल से ममालिके इस्लामिया में राइज व मामूल और अकाबिर अइम्मा व उ़लमा में मुक़र्रर व मक़्बूल है और शरअ़ में ख़ास इस फ़ेल से मुमानअ़त मफ़्क़ूद । और जब तक शरअ़ मुमानअ़त न फ़रमाए किसी और का इस से मना करना मर्दूद है ख़ुसूसन जब कि हरमैन तय्यिबैन, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरा कि मुब्दअ व मर्जए दीनो ईमान हैं, वहां के अकाबिर उ़लमाए किराम और चारों मज़ाहिब के मुफ़्तियाने ज़विल एहतिराम, मुद्दतहा मुद्दत से उस फ़ेल के फ़ाइल व आ़मिल और क़ाइल व क़ाबिल रहे हैं और अइम्मा मोतमिदीन ने उसे बिलाशुबा मुस्तहब व मुस्तहसन ठहराया (तो भला) हराम व नाजाइज़ व बिदअ़ते क़बीहा कैसा ? और जब उस मजलिस व क़ियाम को अ़रब व अ़जम, मिस्र व शाम, रूम व उन्दुलस और दूसरे दियार व ममालिके इस्लाम के उ़लमा मोतमद्दीन ने सलफ़ से आज तक मुस्तहसन जाना तो उस के जवाज़ व इस्तिहबाब पर इज्माअ़ हो गया और जो अम्र इजमाए उम्मत से साबित हो वो हक़ है । गुमराही नहीं। रसूलुल्लाह صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत गुमराही पर इत्तिफ़ाक़ नहीं करती ।[6]

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी का हुस्ने एतिक़ाद

अल्लमा इब्ने जौज़ी رحمۃُ اللہِ علیہ फ़रमाते हैं : पाक है वोह ज़ात जिस ने सरदारे अम्बिया, हुज़ूर नबिय्ये करीम صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم को पैदा फ़रमाया, और आ़लमे बाला में उन के मर्तबे और ज़िक्र को बुलन्द फ़रमाया और जिस शख़्स ने आप की विलादते मुबारका पर ख़ुशी का इज़्हार किया, उस के लिए जहन्नम से बचाव और पर्दा बना दिया और जिस ने आप की विलादत के मौक़े पर एक दिरहम ख़र्च किया, तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم उस के लिए ऐसी सिफ़ारिश करेंगे जो मक़्बूले बारगाह होगी और अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को हर दिरहम के बदले दस दिरहम अ़ता फ़रमाएगा । पस ऐ उम्मते मुहम्मद ! तुम्हें मुबारक हो कि तुम ने दुनिया और आख़िरत में बहुत बड़ी भलाई हासिल कर ली ।[7]

अल्लाह पाक हमें अकाबिरीन की तालीमात और उन के क़दमों के निशानात पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) الدرر السنیۃ فی الرد علی الوھابیۃ، ص 50 (2) عقد الجوہر فی مولد النبی الازھر، ص 11 (3) فیصلہ ہفت مسئلہ، ص 50، 111 (4) فتاوی رضویہ، 26 / 507 بحوالہ اثبات القیام (5) مواہب لدنیہ، 1 / 78 (6) فیصلہ ہفت مسئلہ توضیحات و تشریحات، ص 55 (7) مولد العروس، ص 66۔

अह़कामे तिजारत

1 औ़रत का जुमुआ़ के वक़्त में ख़रीदारी करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मर्द ह़ज़रात के लिए तो जुमुआ़ के वक़्त ख़रीदो फ़रोख़्त करना, नाजाइज़ है लेकिन ख़वातीन पर तो जुमुआ़ नहीं होता उन के लिए उस के वक़्त में ख़रीदो फ़रोख़्त करने का क्या हुक्म है ?

जवाब : जिन अफ़राद पर नमाज़े जुमुआ़ फ़र्ज़ है, उन के लिए जुमुआ़ की पहली अज़ान होते ही नमाज़े जुमुआ़ के लिए सई़ करना वाजिब है। उस वक़्त ख़रीदो फ़रोख़्त और हर वोह काम जो सई़ के मनाफ़ी हो, नाजाइज़ और मकरूहे तह़रीमी है। अलबत्ता औ़रतें और वोह अफ़राद जिन पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं या वोह जुमुआ़ की नमाज़ अदा कर चुके हों, उन के लिए उस वक़्त आपस में ख़रीदो फ़रोख़्त करना मकरूह नहीं है। ताहम उन का ऐसे अश्ख़ास से ख़रीदो फ़रोख़्त करना, नाजाइज़ व गुनाह है कि जिन पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है और क़रीबी मस्जिद में अज़ाने जुमुआ़ हो चुकी है और उन लोगों ने अभी तक नमाज़े जुमुआ़ अदा भी नहीं किया। इस की वजह येह है कि जिस शख़्स पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है, उस पर सई़ वाजिब हो चुकी है अब अगर वोह नमाज़े जुमुआ़ की सई़ करने की बजाए ख़रीदो फ़रोख़्त करे तो मुमानअ़त का मुर्तकिब होता है, और ख़रीदार उस फ़ेल में उस की इआ़नत करता है जिस की वजह से येह भी गुनाहगार होगा।

ह़ाशियतुत्तह़त़ावी अ़ला मराक़ियुल फ़लाह़ में है : ”(ويجب ترك البيع)۔۔۔وفی الكلام اشعار بان من لم تجب عليه الجمعة مستثنى من الحكم كما فى القهستانی یعنی من لم تجب علیهما معا اما اذا وجبت علی احدهما دون الآخر اثما جمیعا لان الاول ارتکب النهی والثانی اعانه علیه“ यानी : बैअ़ को तर्क करना वाजिब है और इ़बारत में इस बात का इशारा है कि जिस पर जुमुआ़ वाजिब नहीं वोह उस हुक्म से मुस्तस्ना है, जैसा कि क़हस्तानी में है। यानी वोह दोनों शख़्स जिन में से किसी पर भी जुमुआ़ वाजिब न हो। लेकिन अगर एक पर जुमुआ़ वाजिब हो और दूसरे पर न हो तो (ख़रीदो फ़रोख़्त करने से) दोनों गुनाहगार होंगे, क्यूंकि पहले ने मुमानअ़त का इर्तिकाब किया और दूसरे ने उस की मदद की। (حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، جلد01، صفحہ517)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़ुर्अ़ा अन्दाज़ी के ज़रीए इन्आ़म की एक जाइज़ सूरत

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि आज कल मुख़्तलिफ़ Marts, Shopping Malls वग़ैरा में इस त़रह़ की ऑफ़र होती है कि आप मसलन 10 हज़ार या फ़ुलां

रक़म तक की शोपिंग करते हैं तो आप का नाम क़ुर्आ अन्दाज़ी (Lucky Draw) में डाल दिया जाएगा और उस में मुख़्तलिफ़ इन्आमात मौजूद होते हैं। Lucky Draw में जिस का नाम निकलेगा उस को वोह तमाम इन्आमात मिल जाएंगे। मेरा सुवाल येह है कि मज़्कूरा तरीक़एकार की शरई हैसियत क्या है और उस पर मिलने वाले इन्आम की क्या शरई हैसियत है ?

नोट : उस में हमें अलग से कोई रक़म जमा नहीं करवानी है अगर हम मुतअय्यन क़ीमत तक की ख़रीदारी कर लेते हैं तो वोह हमारा नाम क़ुर्आ अन्दाज़ी में शामिल कर लेंगे।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में बयान कर्दा तरीक़एकार के मुताबिक़ कम्पनी का मख़्सूस रक़म तक की ख़रीदारी करने पर क़ुर्आ अन्दाज़ी में नाम डालना और नाम निकलने पर मुख़्तलिफ़ इन्आमात देना जाइज़ व दुरुस्त है क्यूंकि मज़्कूरा तरीक़एकार में शरअ़न कोई ख़राबी नहीं जिस की वजह से उसे नाजाइज़ क़रार दिया जाए और न ही कम्पनी क़ुर्आ अन्दाज़ी के अलग से कोई पैसे ले रही है बल्कि कम्पनी ने अपनी मज्मूई सेल (Sale) बढ़ाने के लिए येह इन्आमी स्कीम निकाली है कि फ़ुलां रक़म तक ख़रीदारी करने पर ख़रीदार का नाम क़ुर्आ अन्दाज़ी में डाल दिया जाएगा फिर जिस का नाम निकलेगा उस को मुख़्तलिफ़ इन्आंमात दे दिए जाएंगे। लिहाज़ा मज़्कूरा इन्आमात लेना जाइज़ व दुरुस्त है।

मुफ़्ती वक़ारुद्दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लिखते हैं : “कोई शख़्स या कम्पनी अपने माल की बिक्री बढ़ाने के लिए ऐसा करती है कि पैकेट या डब्बे के अन्दर एक कूपन रख देती है, जिस पैकेट में से टिकट निकलेगा उस पर इन्आम दिया जाएगा। जिन लोगों के पैकेट में वोह टिकट निकलेंगे, तो उन में क़ुर्आ अन्दाज़ी कर के इन्आम दिया जाएगा येह सूरत जाइज़ है। इसी तरह कोई शख़्स क़ुर्आ अन्दाज़ी कर के हज पर भेजे तो येह भी जाइज़ है।” (وقار الفتاویٰ، 3/275)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

3 जाली नोट आगे चलाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरे पास कहीं से 500 का जाली नोट आ गया है जो कि देखने में बिल्कुल अस्ली जैसा लग रहा है बैंक की मशीन से चेक करने पर मालूम हुवा कि नोट जाली है अब मुझे मालूम नहीं कि येह नोट किस ने दिया है, क्या मैं ख़ुद को नुक़्सान से बचाने के लिए येह नोट आगे चला सकता हूं क्यूंकि मार्केट में लोगों को पता नहीं चलेगा और येह चलता रहेगा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप का जान बूझ कर जाली नोट आगे चलाना, नाजाइज़ो ह़राम है क्यूंकि उस में अपने मुसलमान भाई को धोका देना है। और धोका दही का मुआ़मला इस क़दर संगीन है कि मुसलमान तो मुसलमान, काफ़िर को धोका देना भी ह़राम है।

चुनान्चे खरे की जगह खोटे सके देने से मुतअ़ल्लिक़, फ़तावा हिन्दिया में है : ”رد العدليات من له بصارة على أنها زيف فليس له أن يدفع إلى من يأخذها مكان الجيدة لأنه تلبيس وغدر كذا في القنية“ तर्जमा : अगर किसी शख़्स को अ़दाली सिक्के लौटाए गए और उसे मालूम है कि येह अ़दाली सिक्के खोटे हैं तो अब उस के लिए जाइज़ नहीं कि वोह उन सिक्कों को जय्यिद सिक्कों की जगह ऐसे शख़्स को दे दे जो उन्हें क़बूल कर ले, क्यूंकि येह धोका और ख़ियानत है। इसी तरह क़ुनिया में भी मज़्कूर है। (فتاویٰ عالمگیری، 5/367)

इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : “ग़दर व बद अ़हदी मुत्लक़न सब से ह़राम है, मुस्लिम हो या काफ़िर, ज़ीम्मी हो या ह़र्बी, मुस्तामिन हो या ग़ैर मुस्तामिन, अस्ली हो या मुर्तद।” (फ़तावा रज़विय्या, 14/139)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चचीजान ह़ज़रते उम्मुल फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत में अपना ख़्वाब अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप के मुबारक जिस्म का हिस्सा मेरे घर आया है। येह सुनते ही आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने अच्छा ख़्वाब देखा, फ़ात़िमा के यहां बेटा पैदा होगा और तुम उसे दूध पिलाओगी । चुनान्चे जब ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के यहां बेटे की विलादत हुई तो ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने उन्हें दूध पिलाया।[1]

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह नवासे जिन की विलादत की बिशारत ख़्वाब के ज़रीए़ उन की पैदाइश से पहले ही दे दी गई उन का नाम मुबारक ह़सन, कुन्यत अबू मुह़म्मद जब कि अल्क़ाबात तक़ी, सय्यिद, सिब्ते़ रसूलुल्लाह और सब्ते़ अकबर नीज़ आप को रैहानतुर्रसूल (यानी रसूले ख़ुदा का फूल) भी कहते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की विलादते बा सआ़दत 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी में हुई।[2]

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने लाडले नवासे के कान में अज़ान कही[3] अपने लुआ़बे दहन से तह़नीक (घुट्टी) दी[4] और 2 दुम्बों के ज़रीए़ आप का अ़क़ीक़ा किया।[5]

हम शक्ले मुस्त़फ़ा ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यूं तो नवासए रसूल इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के कसीर फ़ज़ाइल हैं लेकिन आप की एक बड़ी फ़ज़ीलत व अ़ज़मत येह है कि आप की मुबारक सूरत अपने नानाजान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलती जुलती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक बार नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा कर रवाना हुए तो इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बच्चों के साथ खेलते हुए देखा, आप ने नवासए रसूल को अपने कन्धे पर उठा लिया और फ़रमाने लगे : मेरे वालिद आप पर क़ुरबान ! आप ह़ज़रते अ़ली से नहीं बल्कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबेह (यानी मिलते जुलते) हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم (जो उस वक़्त क़रीब मौजूद थे येह बात सुन कर) हंसने लगे।[6]

शफ़्क़ते मुस्तफ़ा नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को कभी मुबारक गोद में उठाए तो कभी मुबारक कन्धों पर सुवार किए हुए घर से बाहर तशरीफ़ लाते, कभी आप को देखने और प्यार करने के लिए सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के घर तशरीफ़ ले जाते। हज़रते सय्यिदुना इमाम हसने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी आप صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बेहद मानूस हो गए थे कि कभी नमाज़ की हालत में मुबारक पीठ पर सुवार हो जाते।[7]

राकिबे दोशे मुस्तफ़ा एक मरतबा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमामे हसन को मुबारक कन्धे पर सुवार किए हुए थे तो किसी ने अ़र्ज़ की : نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَام यानी साहिबज़ादे ! आप की सुवारी तो बड़ी अच्छी है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ यानी सुवार भी तो कैसा अच्छा है ![8]

हज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का बयान है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें नमाज़ पढ़ाते, (दौराने नमाज़) हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जो अभी छोटे से थे तशरीफ लाते और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सज्दा फ़रमाते तो वोह उछल कर आप की गर्दन शरीफ़ और पीठ मुबारक पर बैठ जाते। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निहायत आराम से अपना सरे अक़्दस सज्दे से उठाते और उन्हें शफ़्क़त से उतारते। (एक मरतबा नमाज़ के बाद) सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या रसूलल्लाह ! आप इस बच्चे के साथ (शफ़्क़त व मेहरबानी) का जो बरताव फ़रमाते हैं वोह हम ने किसी और के साथ नहीं देखा। रहमते आलम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّهٗ رَيْحَانَتِيْ مِنَ الدُّنْيَا यानी येह दुनिया में मेरा फूल है।[9]

हज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को कन्धे पर उठाए हुए हैं और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर रहे हैं : ऐ अल्लाह ! मैं इस से महब्बत करता हूं तू भी इस से महब्बत फ़रमा।[10]

एक बार हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर जल्वागर थे और हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ (मिम्बर पर) आप के बराबर बैठे हुए थे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी लोगों की तरफ़ तवज्जोह करते और कभी इमाम हसन की तरफ़ नज़र फ़रमाते, फिर आप صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ ابْنِيْ هٰذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهَ اَنْ يُّصْلِحَ بِهٖ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيْمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِيْن यानी मेरा येह बेटा सरदार है, अल्लाह पाक इस के ज़रीए मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुलह करवा देगा।[11]

इमामे हसने मुज्तबा की ख़िलाफ़त अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शहादत के बाद हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ मस्नदे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और अहले कूफ़ा ने आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने वहां कुछ अ़र्सा क़ियाम फ़रमाया और फिर चन्द शराइत़ के साथ उमूरे ख़िलाफ़त हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के सिपुर्द फ़रमा दिए। हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने तमाम शराइत़ क़बूल कीं और बाहम सुलह हो गई, यूं हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मोजिज़ा ज़ाहिर हुवा जो आप ने फ़रमाया था कि अल्लाह पाक मेरे इस फ़रज़न्द की बदौलत मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुलह फ़रमाएगा।[12]

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की मुबारक सीरत ख़ौफ़े ख़ुदा, इ़श्क़े मुस्तफ़ा, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही, इ़बादतो रियाज़त और दीगर औसाफ़े हसना से भरपूर है। आप की मुबारक सीरत की कुछ झल्कियां मुलाहज़ा फ़रमाइए :

हाथों हाथ ज़रूरत पूरी कर दी हज़रते इमामे हसने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की ख़िदमत में एक साइल ने हाज़िर हो कर तहरीरी दरख़्वास्त पेश की। आप ने (पढ़े बग़ैर ही) फ़रमाया : तुम्हारी ज़रूरत पूरी की जाएगी। अ़र्ज़ की गई : ऐ नवासए रसूल ! आप उस

की दरख़्वास्त को पढ़ कर उस के मुताबिक़ जवाब देते तो बेहतर था। इरशाद फ़रमाया : जब तक मैं उस की दरख़्वास्त पढ़ता वोह मेरे सामने ज़िल्लत की हालत में खड़ा रहता, अगर अल्लाह पाक मुझ से इस बारे में सुवाल फ़रमा ले तो मैं उस का क्या जवाब दूंगा ?[13]

10 हज़ार दिरहम से नवाज़ दिया एक मरतबा कोई शख़्स आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ के पहलू में बैठ कर अल्लाह पाक से दस हज़ार दिरहम का सुवाल कर रहा था। उस की येह दुआ सुन कर आप घर तशरीफ़ लाए और उस के लिए 10 हज़ार दिरहम भिजवा दिए।[14]

सब कुछ ख़ैरात कर दिया सय्यिदुल अस्ख़िया हज़रते सय्यिदुना इमाम हसने मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने 2 मरतबा अपने घर का सारा जब कि 3 मरतबा आधा मालो अस्बाब अल्लाह पाक की राह में ख़र्च फ़रमाया।[15]

25 पैदल हज हज़रते सय्यिदुना इमाम हसने मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने (मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा) पैदल चल कर 25 हज अदा फ़रमाए।[16]

वफ़ात आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने 5 रबीउ़ल अव्वल 50 हि. को मदीनए मुनव्वरा में इस दारे नापाएदार से रिह़लत फ़रमाई। बवक़्ते वफ़ात आप की उ़म्र 47 साल थी।[17]

नमाज़े जनाज़ा आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा हज़रते सई़द बिन आ़स رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पढ़ाई जो उस वक़्त मदीनए मुनव्वरा के गवर्नर थे। इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने हज़रते सई़द बिन आ़स رَضِیَ اللہُ عَنْہ को जनाज़ा पढ़ाने के लिए आगे बढ़ाया।[18]

जनाज़े में लोगों का रश हज़रते सअ़लबा बिन अबी मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہ बयान करते हैं : मैं इमामे हसन رَضِیَ اللہُ عَنْہ के जनाज़े में शरीक हुवा, आप की तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में (अपनी वालिदए माजिदा के पहलू में) की गई, मैं ने जन्नतुल बक़ीअ़ में लोगों का इस क़दर इज़्दिहाम (Crowd) देखा कि अगर सूई भी फेंकी जाती तो (भीड़ भाड़ की वजह से) वोह भी ज़मीन पर न गिरती बल्कि किसी न किसी इन्सान के सर पर गिरती।[19]

इमामे हसन की औलाद आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ की कसीर औलाद थी, इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने आप के शहज़ादों की तादाद 15 और साहिबज़ादियों की तादाद 8 लिखी है।[20] जब कि इमाम मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ के 12 शहज़ादों के नाम लिखे हैं : हसन, ज़ैद, त़ल्ह़ा, क़ासिम, अबू बक्र और अ़ब्दुल्लाह, उन 6 ने अपने चचाजान सय्यिदुश्शोहदा हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ के साथ मैदाने करबला में जामे शहादत नोश किया। बक़िय्या 6 येह हैं : अ़म्र, अ़ब्दुर्रह़मान, हुसैन, मुहम्मद, याक़ूब और इस्माई़ल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن। इमामे हसन رَضِیَ اللہُ عَنْہ की आल (यानी हसनी सय्यिदों) का सिल्सिला हज़रते सय्यिदुना हसन मुसन्ना और हज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से चला।[21]

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का[22]

नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہ पर अल्लाह पाक की रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)الذریۃ الطاہرۃ للدولابی، ص72 (2)طبقات ابن سعد، 6/352 (3) معجم کبیر، 1/313، حدیث:926 (4)البدایۃ والنہایہ، 5/519 (5)نسائی، ص688، حدیث: 4225 (6)بخاری، 2/486، حدیث:3542 (7)امام حسن کی 30 حکایات، ص4 (8)ترمذی، 5/432، حدیث:3809 (9)مسند بزار، 9/111، حدیث:3657 (10)ترمذی، 5/432، حدیث:3808 (11)بخاری، 2/214، حدیث:2704 (12)سوانح کربلا، ص96 ملخصاً (13)احیاء العلوم، 3/304 (14)تاریخ ابن عساکر، 13/245 (15)حلیۃ الاولیاء، 2/47، حدیث:1434 (16)سیر اعلام النبلاء، 4/387 (17)تقریب التہذیب، ص240 (18)الاستیعاب، 1/442 ملخصاً (19)الاصابہ، 2/65 (20)المنتظم، 5/225 (21)سیر اعلام النبلاء، 4/401 (22)حدائقِ بخشش، ص246۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

रबीउ़ल अव्वल इस्लामी साल का तीसरा महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए इ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 106 का मुख़्तसर ज़िक्र **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** रबीउ़ल अव्वल 1439 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 13 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

1 ह़ज़रते अबू दुजाना समाक बिन ख़र्शा ख़ज़रजी अन्सारी رَضِیَ اللہُ عَنْہ बद्री सह़ाबी और बहादुर व निडर मुजाहिद थे, मुवाख़ाते मदीना में क़दीमुल इस्लाम मुहाजिर सह़ाबी ह़ज़रते उ़त्बा बिन ग़ज़्वान क़रशी رَضِیَ اللہُ عَنْہ के भाई बनाए गए, ग़ज़्वए उह़ुद और जंगे यमामा में शुजाअ़त के जौहर दिखाए, तमाम ग़ज़्वात में शरीक रहे, जंगे यमामा (रबीउ़ल अव्वल 12 हि.) में शहीद हुए।[1]

2 ह़ज़रते अबू सुहैल अ़ब्दुल्लाह बिन सुहैल क़रशी आ़मिरी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की पैदाइश 13 क़ब्ले बिअ़सत मक्कए मुकर्रमा में क़ुरैश के ज़हीन व मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार ह़ज़रते सुहैल बिन अ़म्र के हां हुई। आप अव्वलीन मुसलमानों से हैं, ह़बशा व मदीना हिजरत की, ग़ज़्वए बद्र समेत तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुए, मारिकए यमामा (रबीउ़ल अव्वल) 12 हि. में 38 साल की उ़म्र में जामे शहादत नोश फ़रमाया।[2]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام

3 मुह़द्दिसे कबीर शैख़ अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ख़ारिफ़ी हमदानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ रावी ह़दीस, सिक़ह व सुदूक़, कसीरुर्रिवायात और फ़न्ने ह़दीस में नुमायां शख़्सियत थे। आप का विसाल रबीउ़ल अव्वल 199 हि. को कूफ़ा में हुवा। नमाज़े जनाज़ा उन के क़रीबी दोस्त शैख़ मुह़म्मद बिन बिश्र अ़बदी ने पढ़ाई।[3]

4 क़ाज़िए ह़ल्ब शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद जमाल मालिकी नहरीरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 740 हि. में हुई और

मज़ार ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद बशीर अह़मद रज़वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

12 रबीउ़ल अव्वल 807 हि. को क़स्बा सुर्मीन (शाम) में विसाल हुवा। आप जय्यिद आ़लिमे दीन व फ़क़ीह, क़ाज़ी व मुदर्रिस, ज़हीनो फ़त़ीन, फ़क़ीह, इ़ल्मे ह़दीस, फ़िक़्ह, तारीख़ और तसव्वुफ़ के माहिर, ख़ुश मिज़ाज थे।[4]

5 शैख़ अ़ब्दुल कबीर बिन शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वाह़िद ह़सनी कत्तानी رَضِیَ اللہُ عَنْہ जलीलुल क़द्र इमाम, मुह़द्दिस, मस्नदुल अ़स्र, वसीउ़ल मुतालआ, मुत्तबेअ़ सुन्नत, बेहतरीन कातिब, शैख़े त़रीक़त, मुन्कसिरुल मिज़ाज, अल इन्तिसारुल लि आलि न्नबिय्यिल मुख़्तार समेत कई कुतुबो रसाइल के मुसन्निफ़ और सालेह़ बुज़ुर्ग थे। बानी त़रीक़ए कत्तानिया शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल कबीर ह़सनी कत्तानी आप के क़ाबिले फ़ख़्र फ़रज़न्द थे। आप का विसाल 23 या 26 रबीउ़ल अव्वल 1333 हि. को हुवा, तदफ़ीन ज़ाविया कत्तानिया मह़ल्ला क़त़ानीन, फ़ास, मग़रिब (मराकिश) में की गई।[5]

6 तल्मीज़े मुह़द्दिसे आज़म ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद बशीर अह़मद रज़वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1346 हि. को एक इ़ल्मी घराने में हुई और विसाल 10 रबीउ़ल अव्वल 1425 हि. को हुवा। तदफ़ीन माई शाह फ़रीदिया क़ब्रिस्तान में की गई। बाद में मज़ार की तामीर हुई। आप फ़ाज़िले जामिआ़ रज़विय्या मज़्हरुल इस्लाम, जय्यिद आ़लिमे दीन, बेहतरीन ख़त़ीब और जामेअ़ मस्जिद मुहाजिरीन व मस्जिद मदीना के इमाम थे।[6]

7 तल्मीज़ हुज्जतुल इस्लाम व सदरुश्शरीआ, शैख़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना ग़ुलाम जीलानी आज़मी घोसी رحمۃ اللہ علیہ आज़म गढ़ में 1320 हि. में पैदा हुए और 6 रबीउ़ल अव्वल 1397 हि. को जाए पैदाइश में फ़ौत हुए। आप उस्ताज़ुल उ़लमा, शैख़ुल ह़दीस, माहिर अ़रबी अदब, सिल्सिलए क़ादिरिया बरकातिया रज़विया के मजाज़, सदरुल मुदर्रिसीन और मुह़श्शीकुतुबे दर्से निज़ामी थे।[7]

8 अ़लम बरदारे मस्लके आला ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अस्लम रज़वी رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश 1951 ई. को हुई और 24 रबीउ़ल अव्वल 1434 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार जामिआ इस्लामिया रज़विया ईदगाह मस्जिद से मुत्तसिल है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ारिग़ुत्तह़सील गुलिस्ताने मुह़द्दिसे आज़म, मुरीद नब्बाज़े क़ौम अ़ल्लामा ह़ाजी अबू दावूद मुह़म्मद सादिक़, कई मसाजिद के इमामो ख़त़ीब और बानी थे।[8]

औलियाए किराम رحمہم اللہ السلام

9 ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद मदनी ह़सनी رحمۃ اللہ علیہ की विलादत 12 रमज़ान 299 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई और यहीं 17 रबीउ़ल अव्वल 415 हि. को त़वील उ़म्र पा कर फ़ौत हुए, तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में की गई, आप ने अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिद दावूद अमीर رحمۃ اللہ علیہ से 349 हि. में ख़िलाफ़त पाई। आप आ़लिम, फ़ाज़िल और मुत्तक़ी थे।[9]

10 ह़ज़रते सय्यिद गदा रहमान सानी कन्धारी رحمۃ اللہ علیہ ह़ज़रते सय्यिद शम्सुद्दीन आ़रिफ़ رحمۃ اللہ علیہ के ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिद महबूब शाह क़न्धारी رحمۃ اللہ علیہ के फ़र्ज़न्द दिलबन्द थे, आप ज़ाहिरी व बात़िनी हुस्न से मालामाल और त़रीक़त के आला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे, आप ने 12 रबीउ़ल अव्वल 917 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार मुबारक ख़ैबर बालाई औसत़ में है।[10]

11 ह़ज़रते ख़्वाजा ज़ाहिद वख़्शी رحمۃ اللہ علیہ अ़ल्लामा ख़्वाजा याक़ूब चर्ख़ी के नवासे और ख़्वाजा उ़बैदुल्लाह अह़रार رحمۃ اللہ علیہ के मुरीदो ख़लीफ़ा थे, आप जामेअ़ इ़ल्मे ज़ाहिरी व बात़िनी, मुर्शिदे कामिल, तसर्रुफ़ अ़ज़ीम और इस्तिअ़दाद व

ह़ज़रते ख़्वाजा ज़ाहिद वख़्शी رحمۃ اللہ علیہ

क़ाबिलियत में आला थे। आप का विसाल यकुम रबीउ़ल अव्वल 936 हि. को कचक वख़्शीवर (Kichik Vakhshivor) सूबए सरख़न्दरिया, उज़बेकिस्तान मे हुवा और यहीं मज़ार है।[11]

12 उ़र्वतुल वुस्क़ा, मज्दुद्दीन ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद मासूम सरहिन्दी رحمۃ اللہ علیہ की विलादत 10 शव्वाल 1007 हि. को सरहिन्द शरीफ़ (मशरिक़ी पंजाब, हिन्द) में हुई और यहीं 9 रबीउल अव्वल 1079 हि. को वफ़ात पाई, आप जय्यिद आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त, वालिदे गिरामी ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी رحمۃ اللہ علیہ के सच्चे जानशीन और कसीरुल फ़ैज़ बुज़ुर्ग थे।[12]

13 साहिबज़ादए मख़्दूमुल औलिया, ताजुल अस्फ़िया ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुस्तफ़ा अशरफ़ رحمۃ اللہ علیہ की पैदाइश ज़ुलक़ादा 1311 हि. को हुई और 17 रबीउ़ल अव्वल 1376 हि. को विसाल फ़रमाया। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त और शबीहे ग़ौसे आज़म सय्यिद अ़ली हुसैन अशरफ़ी के साहिबज़ादे और ख़लीफ़ा थे, मौलाना सय्यिद अबुल फ़त्ह मुज्तबा अशरफ़ और अ़ल्लामा सय्यिद ह़ामिद अशरफ़ आप के क़ाबिले फ़ख़्र साहि़बज़ादगान हैं।[13]

---

(1)اسد الغابۃ، 2/524، 525-6/102، 103(2)الاستیعاب، 3/57(3)طبقات ابن سعد، 6/364(4)الضوء اللامع لاھل القرن التاسع، 5/42، 43(5)موسوعہ اعلام المغرب، جز8، 2886، 2887(6)ایک علمی گھرانے کا سفر، ص2تا5(7)سیرت صدر الشریعہ، ص231، 232(8)پمفلٹ: مختصر سوانح مولانا محمد اسلم رضوی(9)اتحاف الاکابر، ص160-تذکرہ مشائخ قادریہ، ص56 (10)تذکرہ مشائخ قادریہ فاضلیہ، 109، 110(11)حضرات القدس، دفتر اول، ص248، 255(12)تاریخ مشائخ نقشبند، 401تا418(13)مخدوم الاولیاء، ص392، 393وغیرہ۔

नए लिखारी
(New Writers)
नए लिखने वालों के इन्आम याफ़्ता मज़ामीन

हज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام और क़ुरआन

मुहम्मद शायान नवेद
(मुदर्रिस जामिअ़तुल मदीना)

क़ुरआने मजीद अल्लाह तआ़ला की आख़िरी किताब है जिस में अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के वाक़िआ़त को हिदायत और नसीहत के लिए बयान फ़रमाया गया है। उन्ही बरगुज़ीदा हस्तियों में हज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्र भी बड़ी अहमियत के साथ आया है। आप عَلَیْہِ السَّلَام को **"ज़ुन्नून"** और **"साहिबुल हूत"** के लक़ब से भी याद किया गया है। आप عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ सब्र, तौबा, दुआ़ और अल्लाह तआ़ला की रह़मत का अ़ज़ीम सबक़ देता है। क़ुरआने मजीद ने मुख़्तलिफ़ सूरतों में आप عَلَیْہِ السَّلَام का तज़्किरा फ़रमाया ताकि उम्मते मुस्लिमा आज़्माइश में घबराहट के बजाए अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करे।

हज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला ने शहरे नैनवा की त़रफ़ मबऊ़स फ़रमाया। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम के एक लाख या इस से ज़ियादा अफ़राद को तौह़ीद की दावत दी। जब क़ौम ने इन्कार किया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام नाराज़ हो कर बस्ती से निकल गए। क़ुरआने मजीद में है: ﴿وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَیْهِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़ुन्नून को (याद करो) जब चला ग़ुस्से में भरा तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे। (پ17،الانبیآء:87)

आप عَلَیْہِ السَّلَام कश्ती में सुवार हुए। क़ुरआ़ में आप عَلَیْہِ السَّلَام का नाम निकला तो आप को दरिया में डाल दिया गया। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से एक बड़ी मछली ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को निगल लिया। मछली के पेट की तारीकी, समुन्दर की तारीकी और रात की तारीकी में आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने रब को पुकारा। येह दुआ़ क़ुरआने मजीद में बयान हुई: ﴿لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ﳓ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई माबूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा। (پ17،الانبیآء:87)

येह दुआ़ "आयते करीमा" कहलाती है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : دَعْوَةُ ذِی النُّوْنِ اِذْ دَعَا وَهُوَ فِی بَطْنِ الْحُوْتِ﴿لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ﴾ فَاِنَّهٗ لَمْ یَدْعُ بِهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ فِیْ شَیْءٍ قَطُّ اِلَّا اسْتَجَابَ اللّٰهُ لَهٗ

तर्जमा : ज़ुन्नून की दुआ़ जब उन्हों ने मछली के पेट में की, ﴿لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ﴾ जो मुसलमान किसी चीज़ के लिए येह दुआ़ करे अल्लाह ज़रूर क़बूल फ़रमाता है। (ترمذی،5/302،حدیث:3516)

अल्लाह तआ़ला ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और मछली को हुक्म दिया कि उन्हें साहिल पर उगल दे। क़ुरआन

फ़रमाता है : ﴿فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُـْۨجِی الْمُؤْمِنِیْنَ(۸۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उस की पुकार सुन ली और उसे ग़म से नजात बख़्शी और ऐसी ही नजात देंगे मुसलमानों को। (پ17،الانبیآء:88)

ह़ज़रते यूसुन عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम का अन्जाम दूसरी क़ौमों से मुख़्तलिफ़ हुवा। जब उन्हों ने अ़ज़ाब के आसार देखे तो सच्चे दिल से तौबा कर ली। अल्लाह तआ़ला ने उन से अ़ज़ाब टाल दिया। इरशाद होता है : ﴿فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْیَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ اِیْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ یُوْنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हुई होती न कोई बस्ती कि ईमान लाती तो उस का ईमान काम आता हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब दुनिया की ज़िन्दगी में हटा दिया। (پ11،یونس:98)

सूरतुस्साफ़्फ़ात में भी तफ़्सील से आप عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ बयान हुवा। आप عَلَیْہِ السَّلَام को कद्दू की बेल के साए में शिफ़ा दी गई और आप दोबारा अपनी क़ौम की त़रफ़ भेजे गए। (دیکھئے:سورۃالصفت:139-148)

ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ हमें सिखाता है कि मोमिन कभी अल्लाह की रह़मत से मायूस नहीं होता। मुश्किल से मुश्किल ह़ालात में भी ﴿لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ﴾ का विर्द नजात का ज़रीआ है। दावते दीन में जल्दबाज़ी के बजाए सब्र करना चाहिए। और येह कि सच्ची तौबा क़ौमों पर से अ़ज़ाब को भी टाल देती है। येही क़ुरआन का पैग़ाम है कि अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

तौह़ीद का नबवी बयान

सय्यिद उसैद
(दर्जए सादिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम की बुन्याद तौह़ीद पर क़ाइम है। तौह़ीद का मत़लब येह है कि अल्लाह तआ़ला को एक माना जाए, उसी की इ़बादत की जाए और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए।

(دیکھئے:التعریفات للجرجانی،ص51)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में लोगों को तौह़ीद की दावत दी और इसे दीने इस्लाम की अस्ल बुन्याद क़रार दिया। क़ुरआनो ह़दीस में तौह़ीद की बड़ी अहमियत बयान की गई है क्यूंकि इन्सान की कामयाबी इसी में है कि वोह सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान रखे।

तौह़ीद की दावत और इस की अहमियत

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब से पहले लोगों को तौह़ीद की तालीम दी और इस की अहमियत बयान फ़रमाई है, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : یٰاَیُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا तर्जमा : ऐ लोगों कहो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं तुम कामयाब हो जाओगे। (مسند احمد،5/423،حدیث:16023)

आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ اَنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، دَخَلَ الْجَنَّةَ तर्जमा : जो शख़्स इस ह़ाल में मरा कि वोह यक़ीन रखता था कि अल्लाह के इ़लावा कोई माबूद नहीं तो वोह शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा। (مسلم،ص42،حدیث:136)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ फ़रमाया कि इन्सान की नजात का अस्ल ज़रीआ अल्लाह तआ़ला की वह़दानियत पर ईमान है, لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ सिर्फ़ ज़बान से कहने का नाम ईमान नहीं बल्कि दिल से इस पर यक़ीन रखा जाए, साथ ही साथ उस की इ़बादत करना भी ज़रूरी है।

अल्लाह तआ़ला का बन्दों पर ह़क़

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : فَاِنَّ حَقَّ اللّٰهِ عَلٰى عِبَادِهٖ اَنْ يَعْبُدُوْهُ، وَلَا يُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا अल्लाह का बन्दों पर ह़क़ येह है कि वोह सिर्फ़ उसी की इ़बादत करें और उस के साथ किसी को शरीक न करें। (بخاری،2/270،حدیث:2856)

इस ह़दीसे मुबारका में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तौह़ीद की अस्ल ह़क़ीक़त को निहायत आसान अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है। अल्लाह तआला का सब से बड़ा ह़क़ येह है कि इन्सान सिर्फ़ उसी की इ़बादत करे, उसी से दुआ मांगे, उसी पर भरोसा करे और अपनी तमाम इ़बादात को ख़ालिस उसी के लिए अन्जाम दे।

शिर्क की मज़म्मत और उस से बचने की ताकीद

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शिर्क से भी सख़्ती के साथ मना फ़रमाया, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया सब से बड़ा गुनाह अल्लाह के नज़्दीक कौन सा है? तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया اَنْ تَجْعَلَ لِلّٰہِ نِدًّا وَّھُوَ خَلَقَکَ तर्जमा : येह कि तुम अल्लाह के लिए किसी को हम पल्ला ठहराओ ह़ालांकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। (دیکھئے: بخاری، 3/166، حدیث: 4477)

इस ह़दीस से मालूम होता है कि तौह़ीद इस्लाम की बुन्याद है और शिर्क सब से ख़त़रनाक गुनाह है। इन्सान जब किसी और को अल्लाह के बराबर समझे या इ़बादत में किसी को शरीक करे तो वोह अल्लाह तआला के अ़ज़ीम ह़क़ को पामाल करता है। इसी लिए क़ुरआनो ह़दीस में बार बार शिर्क से बचने की ताकीद की गई है।

तौह़ीद पर क़ाइम रहने की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तौह़ीद पर क़ाइम रहने की बड़ी फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमाई है। एक आदमी नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल ! वाजिब करने वाली दो बातें कौनसी हैं? आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ مَاتَ يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ. जो शख़्स इस ह़ाल में फ़ौत हो कि वोह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता हो तो वोह जन्नत में जाएगा, और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराते हुए मरा, वोह दोज़ख़ में दाख़िल होगा।

इस ह़दीस में तौह़ीद को जन्नत का रास्ता क़रार दिया गया है, क्यूंकि तौह़ीद इन्सान के अ़क़ीदे को पाक करती है और बन्दे का तअ़ल्लुक़ अपने रब के साथ मज़बूत बनाती है। जब इन्सान सिर्फ़ अल्लाह तआला पर ईमान रखता है, उसी की इ़बादत करता है और हर ह़ाल में उसी पर भरोसा करता है तो अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल से जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है।

आख़िर में येह बात वाज़ेह होती है कि तौह़ीद इस्लाम की रूह़ और बुन्याद है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी तालीमात के ज़रीए लोगों को अल्लाह की वह़दानिय्यत समझाई और शिर्क से बचने की ताकीद फ़रमाई। हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह ख़ालिस तौह़ीद पर क़ाइम रहे और अपनी इ़बादत को सिर्फ़ उसी के लिए ख़ालिस करे। येही दुनिया और आख़िरत की कामयाबी का रास्ता है।

मुत़ालए में लुग़त की ज़रूरत व अहमियत

मुह़म्मद नोमान
(दर्जए साबिआ जामिअ़तुल मदीना)

मुत़ालआ इन्सान की ज़ेहनी नश्वो नुमा, इ़ल्म में इज़ाफ़े और शख़्सियत को निखारने का बेहतरीन ज़रीआ है। किताबें इन्सान की सब से अच्छी दोस्त होती हैं, लेकिन इस दोस्ती को पायदार और बा मक़्सद बनाने के लिए एक और मुख़्लिस साथी की ज़रूरत होती है, जिसे हम लुग़त (Dictionary) कहते हैं। मुत़ालआ और लुग़त का चोली दामन का साथ है। बग़ैर लुग़त के मुत़ालआ ऐसा ही है जैसे कोई मुसाफ़िर बग़ैर रहनुमा या नक़्शे के किसी अन्जान शहर की सैर को निकल पड़े।

मुत़ालए के दौरान लुग़त की ज़रूरत क्यूं?

जब हम किसी किताब, अख़बार या मज़्मून का मुत़ालआ करते हैं, तो हमारा वासित़ा बहुत से ऐसे अल्फ़ाज़ से पड़ता है जो हमारे लिए नए या मुश्किल होते हैं। ऐसे में मुत़ालए का तसल्सुल बरक़रार

रखने और मुसन्निफ़ के अस्ल पैग़ाम को समझने के लिए लुग़त की अहमियत दर्जे ज़ैल वुजूहात की बिना पर बढ़ जाती है :

1 मफ़्हूम की दुरुस्त तफ़्हीम :

मुतालए का अस्ल मक़्सद किताब में लिखे गए ख़यालात को समझना होता है। अगर हम किसी मुश्किल लफ़्ज़ का माना जाने बग़ैर आगे बढ़ जाएं, तो पूरे जुम्ले या पैराग्राफ़ का मफ़्हूम बदल सकता है या मुब्हम रह जाता है। लुग़त हमें लफ़्ज़ का बिल्कुल दुरुस्त मतलब बता कर मुसन्निफ़ के ज़ेहन तक हमारी रसाई मुम्किन बनाती है।

2 ज़ख़ीरए अल्फ़ाज़ में वुस्अत :

दौराने मुतालआ जब भी कोई नया लफ़्ज़ सामने आए और हम लुग़त की मदद से उस का माना देख लें, तो वोह लफ़्ज़ हमेशा के लिए हमारे दिमाग़ में महफ़ूज़ हो जाता है। इस तरह मुसल्सल मुतालए और लुग़त के इस्तिमाल से इन्सान का अपना ज़ख़ीरए अल्फ़ाज़ वसीअ़ हो जाता है, जो आगे चल कर उस की अपनी तह़रीर और गुफ़्तगू में झलकता है।

3 तलफ़्फ़ुज़ और इम्ला की दुरुस्ती :

बहुत से अल्फ़ाज़ ऐसे होते हैं जिन्हें हम पढ़ तो लेते हैं लेकिन उन का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ नहीं जानते, ख़ास तौर पर उर्दू ज़बान में जहां एराब (ज़बर, ज़ेर, पेश) बदलने से माना बदल जाता है। लुग़त मुतालआ करने वाले को अल्फ़ाज़ का सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ और दुरुस्त इम्ला सिखाती है।

4 अदबी चाश्नी और बारीकियों को समझना :

शाइरी, फ़ल्सफ़ा या आला दर्जे की नस्री अदब का मुतालआ करते वक़्त अल्फ़ाज़ के ज़ाहिरी माना के इलावा उन के मजाज़ी या इस्तिलाही माना जानना ज़रूरी होता है। एक जामेअ़ लुग़त लफ़्ज़ के मुख़्तलिफ़ पहलूओं और मुहावराती इस्तिमाल को वाज़ेह़ करती है, जिस से मुतालए का लुत्फ़ दोबाला हो जाता है।

लुग़त से दूरी के नुक़्सानात

जो लोग मुतालआ करते वक़्त लुग़त का इस्तिमाल नहीं करते, वोह अक्सर किताब के मतन का ग़लत मतलब निकाल बैठते हैं। लुग़त से दूरी की वज्ह से इन्सान की मालूमात सत़्ही रह जाती हैं और वोह ज़बान की ख़ूबसूरती और उस की गहराई से मह़रूम रहता है। ऐसे क़ारेईन का मुतालआ मह़ज़ वक़्त गुज़ारी बन कर रह जाता है, उस से ह़क़ीक़ी इल्म ह़ासिल नहीं होता।

जदीद दौर और डिजीटल लुग़त का फ़ायदा

पुराने वक़्तों में मुतालए के दौरान भारी भरकम लुग़ात (डिक्शनरीज़) साथ रख कर बैठना और अल्फ़ाज़ ढूंडना एक मुश्किल काम लगता था, जिस से बाज़ औक़ात मुतालए का रब्त टूट जाता था। लेकिन आज के डिजीटल दौर ने येह मुश्किल ह़ल कर दी है। अब स्मार्ट फ़ोन्ज़ में उर्दू और इंग्लिश की बेहतरीन लुग़ात एप्लीकेशन्ज़ की सूरत में मौजूद हैं। मुतालआ करते हुए जैसे ही कोई मुश्किल लफ़्ज़ आए, मह़ज़ चन्द सेकन्डज़ में उस का माना स्क्रीन पर देखा जा सकता है, जिस ने मुतालए के अ़मल को मज़ीद आसान और तेज़ बना दिया है।

याद रखिए ! लुग़त सिर्फ़ इल्मे ज़बान के माहिरीन के लिए नहीं, बल्कि हर उस शख़्स के लिए ज़रूरी है जो मुतालए का शौक़ रखता है। अगर हम चाहते हैं कि हमारा मुतालआ मह़ज़ किताब के सफ़ह़ात पलटने तक मह़दूद न रहे, बल्कि हमारे इल्म और शुऊ़र में ह़क़ीक़ी इज़ाफ़ा करे, तो हमें मुतालए के दौरान लुग़त को अपना मुस्तक़िल रफ़ीक़े सफ़र बनाना होगा।

माहनामा
बच्चों का | फ़ैज़ाने मदीना

बच्चों के लिए प्यारी ह़दीस

परेशानियां दूर करें

हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا
نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

यानी जो शख़्स किसी मुसलमान की दुनिया की कोई परेशानी दूर करेगा, अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस की परेशानियों में से एक परेशानी दूर फ़रमाएगा। (مسلم، ص1110، حدیث:6853)

प्यारे बच्चो ! इस दुनिया में हर इन्सान को कभी न कभी किसी न किसी मुश्किल, परेशानी या मुसीबत का सामना करना पड़ता है। कोई बीमार हो जाता है, किसी पर क़र्ज़ आ जाता है, किसी का कोई अ़ज़ीज़ वफ़ात पा जाता है, कोई ग़ुर्बत और तंगदस्ती का शिकार हो जाता है तो कोई किसी और मुश्किल में मुब्तला हो जाता है। ऐसे वक़्त में अगर कोई हमारी मदद करे, हमें तसल्ली दे या हमारी मुश्किल आसान करने की कोशिश करे तो हमारा दिल ख़ुश हो जाता है और उसके लिए बहुत सारी नेक तमन्नाएं होती हैं।

हमारा प्यारा दीने इस्लाम हमें सिर्फ़ अपनी फ़िक्र करने का नहीं बल्कि दूसरों के दुख दर्द बांटने का भी दर्स देता है। शुरू में लिखी ह़दीसे पाक में येही पैग़ाम दिया गया है।

प्यारे बच्चो ! अगर्चे आप अभी छोटे हैं लेकिन फिर भी बहुत से ऐसे काम कर सकते हैं जिन से दूसरों को राह़त और सुकून मिले। मसलन बीमारों के लिए दुआ करना, ग़मज़दा लोगों की दिलजोई करना, बूढ़ों की मदद करना, रास्ता भूले हुए शख़्स की राहनुमाई करना, किसी ज़रूरतमन्द की ख़बर अपने वालिदैन तक पहुंचाना और हर एक के साथ अच्छा बरताव करना। येह सब काम अल्लाह पाक को पसन्द हैं।

हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सारी दुनिया के लिए रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों की ज़रूरतें पूरी फ़रमाते और तकालीफ़ व परेशानियां दूर करते। चुनान्चे

सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के वालिद शहीद हो गए थे और उन पर क़र्ज़ बाक़ी था। (और ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ परेशान थे।) वोह बारगाहे नबवी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और परेशानी अ़र्ज़ की तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के खजूर के ढेर के पास तशरीफ़ ले गए फिर क़र्ज़ ख़्वाहों को बुलाने का हुक्म दिया और सारा क़र्ज़ अदा कर दिया और काफ़ी खजूरें भी बाक़ी बच गईं।

(دیکھئے: بخاری، 2/247، حدیث:2781)

इस वाक़िए से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबा की माली मुश्किलात और परेशानियों के इज़ाले के लिए भी फ़िक्र फ़रमाया करते थे।

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्सानों के साथ साथ जानवरों की परेशानियां भी दूर फ़रमाते थे। चुनान्चे

एक सफ़र में चन्द लोगों ने एक चिड़िया के बच्चे उठा लिए। जब चिड़िया वापस आई तो अपने बच्चों को न पा कर बेचैन होकर फड़फड़ाने लगी। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की परेशानी देखी और फ़रमाया : इस चिड़िया को इस के बच्चों की वजह से किस ने परेशान क्या है ? इस के बच्चे वापस कर दो।

(ابو داؤد، 3/75، حدیث:2675)

देखा आप ने ! एक छोटी सी चिड़या की परेशानी भी हमारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से देखी न गई।

प्यारे बच्चो ! इस वाक़िए से मालूम हुवा कि मुसलमान को जानवरों पर भी ज़ुल्म नहीं करना चाहिए बल्कि उन की ज़रूरतों का ख़याल रखना चाहिए।

प्यारे बच्चो ! हमें भी अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत से सबक़ हासिल करना चाहिए। अगर कोई बीमार हो तो उस के लिए दुआ करें। अगर कोई ग़मगीन हो तो उसे तसल्ली दें। अगर कोई बूढ़ा या कमज़ोर शख़्स मदद चाहे तो उस की मदद करें। अगर किसी जानवर को तक्लीफ़ पहुंच रही हो तो उसे बचाने की कोशिश करें। अगर किसी पर कोई मुश्किल आ जाए तो अपने वालिदैन या बड़ों को इत्तिलाअ़ दे कर उस की मदद का सामान करें।

याद रखिए ! दूसरों के लिए आसानी पैदा करने वाले लोग अल्लाह पाक को बहुत पसन्द हैं।

अल्लाह पाक हमें दूसरों के काम आने, उन की परेशानियां दूर करने और अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

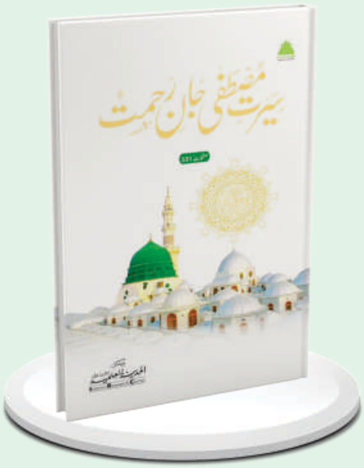

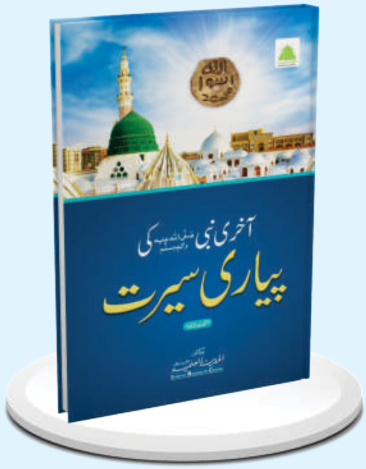

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका के मुख़्तलिफ़ पहलूओं का मुतालआ़ करने के लिए येह दो किताबें **1 आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी सीरत 2 सीरते मुस्तफ़ा जाने रह़मत** आज ही मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए या वेबसाइट से डाउनलोड कर के ख़ुद भी पढ़िए और दूसरों को शेयर भी कीजिए।

सिर्फ़ लश्कर पर बारिश

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم के मोजिज़ात सिर्फ़ हैरत अंगेज़ ही नहीं बल्कि मुसलमानों के लिए राहत, मदद और अल्लाह पाक की रहमत के ज़ुहूर का ज़रीआ भी थे। आज हम एक ऐसे ही ईमान अफ़रोज़ मोजिज़े के बारे में पढ़ेंगे जो ग़ज़्वए तबूक के सफ़र मे ज़ाहिर हुवा।

हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ से अर्ज़ की गई कि हमें ग़ज़्वए तबूक के किसी अहम लम्हे के बारे में बताइए तो आप رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : हम ग़ज़्वए उसरत यानी तबूक के लिए शदीद गर्मी में रवाना हुए थे। एक जगह पड़ाव डाला तो हमें ऐसी शदीद प्यास का सामना करना पड़ा कि ऐसा लगता था जैसे जान ही निकल जाएगी। इस नाज़ुक मौक़े पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم ! अल्लाह पाक ने आप की दुआओं में बड़ी ख़ैर रखी है, हमारे लिए दुआ फ़रमाइए। नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : क्या तुम येह चाहते हो ? अर्ज़ की गई : जी हां। चुनान्चे हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने अपने मुबारक हाथ आस्मान की तरफ़ उठाए। अभी आप ने हाथ नीचे भी न किए थे कि बादल नुमूदार हो गए, उन्हों ने लश्कर पर साया कर लिया और फिर ख़ूब बारिश बर्सी। सहाबए किराम رضی اللہ عنہم ने अपने तमाम बरतन पानी से भर लिए। हज़रते उमर رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जब हम ने ग़ौर किया तो मालूम हुवा कि बारिश का बादल सिर्फ़ लश्कर के ऊपर था और उस से आगे (पीछे) नहीं गया।

(مستدرک للحاکم، 1/384،حدیث:582)

येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم का एक अज़ीमुश्शान मोजिज़ा है कि सिर्फ़ लश्करे इस्लाम पर बारिश हुई आगे (पीछे) न बढ़ी।

इस से मालूम हुवा कि

- हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم की शान व मोजिज़े बयान करना सहाबा के अ़मल से साबित है।

- सख़्त तरीन ह़ालात में भी अल्लाह पाक की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिए।
- मुश्किल वक़्त में अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ करना मोमिन का हथियार और बेहतरीन सहारा है।
- अच्छे मश्वरे का फ़ायदा बसा औक़ात पूरे मजमअ़ और जमाअ़त को पहुंचता है।
- बुज़ुर्गों से दुआ करवानी चाहिए।
- दुआए नबवी बारगाहे इलाही में फ़ौरी त़ौर पर क़बूल होती है।
- इज्तिमाई मुश्किलात के वक़्त हमें बाहमी हमदर्दी का मुज़ाहरा करना चाहिए और एक दूसरे की तक्लीफ़ समझनी चाहिए।
- दीन की राह में आने वाली मुश्किलों के लिए तय्यार और साबित क़दम रहना चाहिए।
- परेशानी से निकलने की हर मुम्किन कोशिश करनी चाहिए।
- अल्लाह पाक जब चाहे बज़ाहिर नामुम्किन नज़र आने वाले ह़ालात को आसान बना देता है।
- अस्बाब इख़्तियार करना और आइन्दा पेश आने वाली मुतवक़्क़ेअ़ ज़रूरियात का पहले ही बन्दोबस्त करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं।
- अगर्चे किसी चीज़ की वक़्ती ज़रूरत पूरी हो जाए मगर फिर भी उसे ज़ाएअ़ नहीं करना चाहिए बल्कि आइन्दा के लिए मह़फ़ूज़ रखना चाहिए ख़ास कर अल्लाह की नेमतों की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिए।

हुरूफ़ मिलाइये !

रह़म दिली इन्सान के बेहतरीन औसाफ़ में से है। इस का मत़लब है दूसरों के साथ नर्मी, मह़ब्बत और हमदर्दी करना। रह़म दिल इन्सान हमेशा दूसरों की मदद के लिए तय्यार रहता है और किसी को तक्लीफ़ देने से बचता है। इस्लाम ने रह़मदिली की बहुत ज़ियादा तालीम दी है। हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरी दुनिया के लिए रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों, बड़ों, जानवरों बल्कि हर मख़्लूक़ पर शफ़क़त फ़रमाते थे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता। (بخاری،4/100،حدیث:5997)

प्यारे बच्चो ! हमें भी चाहिए कि हम अपने दोस्तों के साथ रह़म दिली से पेश आएं, उन की मदद करें, उन से झगड़ा करने से बचें और उन की इ़ज़्ज़त करें।

अल्लाह तआ़ला हमें रह़म दिली जैसी अ़ज़ीम सिफ़त को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

ژ	ۃ	د	ر	د	م	ہ	غ	ا
ر	م	س	ز	ط	ک	آ	س	ر
ن	ش	ی	ق	ن	ا	ک	ی	آ
ر	ر	س	م	ا	ل	س	ا	ن
م	خ	ا	ت	ع	ن	ر	ق	آ
ی	ف	ک	ہ	د	ی	ن	ش	ق
ح	ی	ز	ش	ل	ت	ف	ص	ت
و	ن	ھ	ل	ز	ت	ص	ج	ر
م	ت	ع	ہ	ک	د	د	م	خ

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "नात" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं : 1 مدد 2 ہمدرد 3 اسلام 4 صفت 5 نرمی۔

मीलाद

गर्मियों का मौसम बस इख़्तिताम के क़रीब था तभी क्लासरूम में ज़ियादा गर्मी नहीं थी बल्कि पंखों की हवा बहुत भली लग रही थी। बच्चे काफ़ी ख़ुश और जोश से भरे नज़र आ रहे थे क्यूंकि आज स्कूल में मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिलसिले में "बज़्मे मीलाद" नामी प्रोग्राम होना था और प्रिंसिपल साहिब ने पहले ही बच्चों को बता दिया था कि जुमुआ के दिन पहले लेक्चर के बाद येह प्रोग्राम होगा जिस में शहर से एक बड़े आलिम साहिब बयान (Speech) के लिए भी तशरीफ़ ला रहे थे।

जैसे ही पहले लेक्चर की घन्टी बजी **सर बिलाल** क्लास रूम में दाख़िल हो चुके थे, कुछ बच्चे तो अपनी निशस्तों पर बैठे हुए थे और कुछ बातों में मगन थे जब कि दो बच्चे ज़ोर ज़ोर से गुफ़्तगू कर रहे थे, **सर बिलाल** को देख कर सभी बच्चे ख़ामोश हो गए, इब्तिदाई सलाम और हाल अहवाल पूछने के बाद **सर बिलाल** ने उन दोनों बच्चों को मुख़ातब करते हुए पूछा : क्यूं बच्चो ! किसी मस्अले पर ज़ोरो शोर से बहस जारी था ?

उन में से एक बच्चे का नाम **हम्ज़ा** था वोह जल्दी से कहने लगा : सर ! **उमर भाई** पूछ रहे थे कि मीलाद कैसे मनाना चाहिए ?

सर बिलाल मुस्कुराए : जी **उमर** बेटा बहुत अच्छा सुवाल है आप का, चलें फिर आज हम इस मौज़ूअ पर भी गुफ़्तगू कर लेते हैं, फिर **सर बिलाल** ने वाइट बोर्ड पर सब से ऊपर लिख दिया :

मीलादुन्नबी का माना व मफ़्हूम

बच्चो ! मीलाद का मतलब है विलादत यानी पैदाइश का ज़िक्र तो जब हम मीलादुन्नबी कहते हैं तो इस का मतलब होता है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका का ज़िक्र करना। इस ज़िक्र के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ हो सकते हैं।

फिर सर ने वाइट बोर्ड के दरमियान में एक लाइन खींच कर उसे दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया और दाएं बाएं लिख दिया :

मीलाद कैसे मनाना चाहिए ?

मीलाद कैसे नहीं मनाना चाहिए ?

और बच्चों की तरफ़ देखते हुए बात दोबारा शुरूअ की : बच्चो ! यक़ीनन मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मनाना बड़ी अ़ज़ीम नेकी है लेकिन बक़िय्या नेकियों की तरह हमें इस नेकी को भी इस्लामी तालीमात की रौशनी में मनाना चाहिए तो आज हम येह भी सीखेंगे की मीलादुन्नबी की ख़ुशी मनाने का इस्लामी तरीक़ा क्या है।

पहले येह देखते हैं कि मीलाद मनाते हुए हमें किन चीज़ों से बचना चाहिए, फिर सर ने बाएं तरफ़ वाले हिस्से में पहला पॉइन्ट लिख दिया :

ढोल बाजे : देखें बच्चो ! प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि मुझे आलाते मूसीक़ी (Musical instruments) तोड़ने के

लिए भेजा गया है तो अब कितनी बुरी बात है कि हम उसी नबी के मीलाद की ख़ुशी मनाने के लिए ढोल बाजों का इस्तिमाल करें।

मुसलमानों को तक्लीफ़ : दूसरा पॉइन्ट जिस का हम ने मीलाद मनाते हुए ख़याल रखना है कि हमारे किसी भी अन्दाज़ से मुसलमानों को तक्लीफ़ न हो जैसे कुछ लोग सारा दिन स्पीकरों पर ऊंची आवाज़ में नातें चलाए रखते हैं जिस से ज़ाहिर है दूसरों को तक्लीफ़ होती होगी, तो नातें सुनेंगे लेकिन किसी को तक्लीफ़ दिए बग़ैर।

बेअदबी : तीसरी चीज़ जिस से बचना है वोह है बेअदबी मसलन मीलाद के झन्डे, झन्डियां, यूंही कुछ लोग इस मौक़अ पर ख़ाना काबा व सब्ज़ गुम्बद के मॉडल बनवा लेते हैं तो मीलाद गुज़रते ही उन्हें हिफ़ाज़त से ऐसी जगह रख देना चाहिए जहां बेअदबी न हो। ऐसे ही मीलाद की नियाज़ बांटने में ख़याल रखना है कि रिज़्क़ ज़मीन पर न गिरे, ज़ाएअ न हो बल्कि प्यार से लोगों के हाथ में पकड़ाएं।

अब हम आते हैं कि मीलाद कैसे मनाना चाहिए ?

नेकियों का तोहफ़ा : बच्चो ! हम अपने प्यारों की सालगिरह पर उन्हें गिफ़्टस देते हैं नां लेकिन प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारे दुनियावी तोहफ़ों की तो ज़रूरत नहीं है लिहाज़ा उन के मीलाद के मौक़े पर हमें उन्हें ज़ियादा से ज़ियादा नेकियों के तोहफ़े भेजने चाहिएं, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हदीस मुबारक है कि नमाज़ में मेरी आंखों की ठन्डक है। (سنن کبریٰ للنسائی، ص5280، حدیث:8888)

तो अब मीलाद की ख़ुशी में पांचों नमाज़ें पढ़ना शुरूअ कर दें और आइन्दा पाबन्दी से पढ़ते रहें, वालिदैन के फ़रमां बरदार बेटे बन जाएं, ग़रीबों की मदद करें यक़ीनन प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन तोहफ़ों से बहुत ज़ियादा ख़ुश होंगे।

दुरूदे पाक : बच्चो ! वैसे तो रोज़ाना ही कुछ न कुछ दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनानी चाहिए लेकिन मीलादुन्नबी के महीने में ख़ास तौर पर अपने प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ज़ियादा से ज़ियादा दुरूदे पाक भेजना चाहिए।

सीरतुन्नबी का मुतालआ : बच्चो ! समझाने के लिए कह रहा हूं आज हम में से कोई किसी मश्हूर शख़्सियत (Celebrity) का बहुत बड़ा मद्दाह़ (Fan) हो तो उस की कोशिश होती है उस के बारे में सारी मालूमात ह़ासिल करे फिर कोशिश होती है उस को कॉपी करने की, उस जैसे बाल बनाना, लिबास पहनना। यूंही मीलादुन्नबी का एक अहम मक़्सद येह भी होता है कि इस मौक़अ पर हम अपने प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा इल्म हासिल करें, आप की सीरते मुबारका (Blessed biography) पढ़ें और फिर इस की रौशनी में अपनी ज़िन्दगी को संवार लें, क्यूंकि हम मीलाद इस लिए मनाते हैं कि हमें आप से महब्बत है तो अगर हम आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत न पढ़ें, आप जैसे अख़्लाक़ न अपनाएं, आप की सुन्नतों से नावाक़िफ़ रहें तो येह कैसी महब्बत हुई ?

इतने में बेल बज चुकी थी तो सर कहने लगे : बच्चो अब क़तार में दुरूदे पाक पढ़ते हुए सब बच्चे हॉल में पहुंचें।

मां बाप के नाम

बच्चों को आशिक़े रसूल बनाइए

अल्लाह तआला ने वालिदैन को औलाद की दीनी व अख़्लाक़ी तरबियत की अज़ीम ज़िम्मेदारी सोंपी है। इस तरबियत का सब से अहम पहलू येह है कि बच्चों के दिल में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची महब्बत और अक़ीदत पैदा की जाए, क्यूंकि जिस दिल में जितना इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मज़बूत होता है वोह गुनाहों से उतना ही बचने और नेकियों की त़रफ़ बढ़ने लगता है। ज़ैल में बच्चों के दिल में इश्क़े रसूल पैदा करने के चन्द त़रीक़े बयान किए जाते हैं :

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तआरुफ़ पेश करें

1 शानो अ़ज़मत बयान कीजिए : बच्चों के दिल में इश्क़े मुस्तफ़ा पैदा करने के लिए उन को बताइए कि हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कौन हैं ! नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत बयान कीजिए, बच्चों को बताइए कि शाने मुस्तफ़ा ऐसी बुलन्दो बाला है कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام, फ़िरिश्ते और सारी मख़्लूक़ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मक़ामे अ़ज़मत की मोतरिफ़ है। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस, इ़ल्म, ह़िल्म, रह़मत, अ़द्ल, और अख़्लाक़े ह़सना का कामिल नमूना है। क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान करते हुए फ़रमाया : ﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।(1) दुनिया के हर गोशे में अज़ानों, नमाज़ों और दुरूदो सलाम के ज़रीए आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर जारी है। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से भी होता है कि अल्लाह तआला ने आप को तमाम जहानों के लिए रह़मत बना कर भेजा, और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार दिया। बेशक हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत बयान करना इन्सानी त़ाक़त से बाहर है, क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआला की सब से अ़ज़ीम नेमत और तमाम मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल हैं।

2 बच्चोंको सीरते रसूल सुनाइए : बच्चों के दिल वाक़िआत से बहुत मुतअस्सिर होते हैं। इस लिए रोज़ाना या हफ़्ते में चन्द बार बच्चों को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी, अख़्लाक़, रह़मत और मह़ब्बत भरे वाक़िआत सुनाएं। इस ह़वाले से बच्चों के लिए वोह वाक़िआत ज़ियादा मुतअस्सिर कुन हो सकते हैं जिन में बत़ौरे ख़ास बच्चों पर शफ़्क़ते मुस्त़फ़ा का ज़िक्र हो। मसलन

1 नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बत़ौरे तोह़फ़ा एक बरतन में ह़ल्वा पेश किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम सब को थोड़ा थोड़ा ह़ल्वा दिया, जब मेरी बारी आई और मुझे एक बार देने के बाद फ़रमाया : क्या तुम्हें और दूं। मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी कम उ़म्री की वजह से मुझे और भी दिया, उस के बाद जो लोग बाक़ी रह गए थे उन को दिया।(2)

2 ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मेरा छोटा भाई पैदा हुवा तो मैं उसे हुज़ूर की बारगाह में लाया, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निहायत शफ़्क़तो मह़ब्बत से अपनी गोद में लिया, फिर खजूर मंगवाई, आपने मुबारक मुंह में चबा कर नर्म किया, जब ख़ूब नर्म हो गई तो मेरे नन्हे भाई के मुंह में रख दी। वोह उसे चूसने लगा। आप

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया : अन्सार की खजूर से महब्बत देखो ! आप ने उस के चेहरे पर हाथ मुबारक फेरा और उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।(3)

इस के इलावा कई तरह के वाक़िआ़ सीरत की किताबों में मौजूद हैं जिन में आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्चाई, अमानतदारी, शफ़्क़त, अ़फ़्वो दरगुज़र और जानवरों तक पर रहम करने की अ़जीब मिसालें मौजूद हैं जब बच्चे येह वाक़िआ़त सुनेंगे तो उन के दिल ख़ुद बख़ुद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत से भर जाएंगे।

मक्तबतुल मदीना की बहुत ही प्यारी किताब **"आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सीरत"** जो कि सिर्फ़ 147 सफ़हात पर मुश्तमिल है वोह भी पढ़ कर सुनाएं।

3 सीरते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मुश्तमिल किताबें मुहय्या करें : बच्चों की उ़म्र के मुताबिक़ सीरते नबवी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर लिखी गई किताबें, रसाइल और बच्चों की इस्लामी कहानियां घर में मौजूद होनी चाहिएं। बच्चों को ऐसी किताबों के मुतालए की तरग़ीब दी जाए जिन में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी के वाक़िआ़त आसान ज़बान में बयान किए गए हों। येह मुतालआ़ उन के इ़ल्म में इज़ाफ़ा करेगा और महब्बते रसूल को मज़ीद मज़बूत बनाएगा।

महब्बते रसूल ईमान की जान है

बच्चों को महब्बते रसूल की अहमियत बताइए। उन को बताइए कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَوَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْن

तर्जमा : तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उस के वालिद, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।(4)

येह ह़दीस इस बात की त़रफ़ राहनुमाई कर रही है कि अगर वालिदैन अपने बच्चों को कामिल ईमान वाला, बा अख़्लाक़ और नेक मुसलमान देखना चाहते हैं तो बचपन ही से उन को इ़श्क़े रसूल के जाम भर भर कर पिलाएं।

दुरूदे पाक पढ़ने का आ़दी बनाएं

दुरूदे पाक इ़श्क़े रसूल को बढ़ाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा अपने बच्चे को सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात पर दुरूदे पाक पढ़ने की आदत डालिए। इस के लिए ख़ुसूसी त़ौर पर बच्चे के सामने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे अनवर होने पर महब्बत के साथ दुरूद शरीफ़ मसलन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िए और صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب (यानी ह़बीबे ख़ुदा पर दुरूद पढ़ो) कह कर बच्चे को भी दुरूद पढ़ने की तरग़ीब दीजिए। वक़्तन फ़वक़्तन बच्चे को दुरूद शरीफ़ पढ़ने के फ़ज़ाइल बताते रहें, घर का माह़ौल दुरूदे पाक की फ़ज़ा से मुअ़त्तर रखें।

नातें और अ़ज़मत व अ़क़ीदत भरे कलाम सुनाएं

घर में बच्चों को ऐसे नातिया कलाम सुनाए जाएं जिन में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान, महब्बत और सीरत का बयान हो। नात ख़्वानी की महफ़िलें और ख़ूबसूरत नातिया कलाम बच्चों के जज़्बात को बेदार करते हैं और उन के दिलों में इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्अ़ रौशन करते हैं। इस बात का ख़याल रखें कि नातिया अश्आ़र बच्चों की ज़ेहनी सलाहियत और फ़हम के मुताबिक़ हों जिन का माना व मफ़्हूम ब आसानी बच्चों को समझ में आ जाए, अगर कोई मुश्किल शेर आ जाए तो उस का माना समझाने का एहतिमाम कीजिए।

सुन्नतों पर अ़मल का एहतिमाम

वालिदैन सुन्नतों को रोज़ मर्रा ज़िन्दगी का हिस्सा बनाएं ताकि बच्चे सुन्नतें सीख कर अ़मल करें और इ़श्क़े रसूल में इज़ाफ़ा हो जैसे खाने पीने के आदाब बताएं, सलाम की आ़दत डालें, रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की छोटी छोटी दुआ़एं याद करवाएं।

जज़्बाती वाबस्तगी पैदा करें

वालिदैन बच्चों के सामने मदीनए मुनव्वरा और रौज़ए रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी की ख़्वाहिश का वालिहाना इज़्हार करें। इस के इलावा दीन, शआ़इरे इस्लाम और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब चीज़ों का तज़्किरा करें उन का अदब करना सिखाएं।

अल्लाह पाक हमें और हमारी औलाद को सच्चा आ़शिक़े रसूल बनाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ30،الم نشرح:4 (2) شعب الایمان،5/99،حدیث:5935 (3) معجم کبیر للطبرانی،25/118،حدیث:288 (4) بخاری،1/17،حدیث:15۔

बेटियों को सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरबियत दें

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की राहनुमाई के लिए अपने महबूब रसूल ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी को क़ियामत तक आने वाले तमाम इन्सानों के लिए बेहतरीन नमूना क़रार दिया। एक मुसलमान की कामयाबी इसी में हैं कि वोह अपने अ़क़ाइद, इ़बादात, मुआ़मलात, अख़्लाक़ और मुआ़शरत में सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनाए। वालिदैन पर येह ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि वोह अपनी औलाद, ख़ुसूसन माएं बेटियों की ऐसी तरबियत करें कि उन के दिलों में सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पैदा हो, सुन्नतों को सीखने का शौक़ पैदा हो और सुन्नतों पर अ़मल उन की ज़िन्दगी का ह़िस्सा बन जाए।

आज के दौर में वालिदैन अपनी बेटियों को आला तालीम, जदीद महारतों और दुनियावी आदाब सिखाने के लिए तो बहुत फ़िक्र मन्द नज़र आते हैं, लेकिन येह फ़िक्र निस्बतन कम दिखाई देती है कि हमारी बेटी इस्लामी तालीमात व सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कितना जानती है ? उसे कितनी सुन्नतें याद हैं ? वोह रोज़ मर्रा ज़िन्दगी में कितनी सुन्नतों पर अ़मल करती है ? ह़ालांकि अस्ल कामयाबी सुन्नते नबवी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में है। जिस घर में सुन्नतों पर अ़मल और उन का चर्चा होता है, वहां ख़ैरो बरकत भी नाज़िल होती है और दीनी माह़ौल भी परवान चढ़ता है।

बेटियों की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ तरबियत का आग़ाज़ बचपन ही से होना चाहिए। सब से पहले वालिदैन ख़ुद सुन्नतों पर अ़मल करने वाले हों क्यूंकि बच्चे वालिदैन के किरदार को अपनी आंखों से देख कर सीखते हैं। अगर मां घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करती है, खाने से पहले और बाद की दुआ़एं पढ़ती है, पर्दे की पाबन्द है, नर्म लहजे में गुफ़्तगू करती है, बड़ों का अदब और छोटों पर शफ़्क़त करती है तो बेटी के दिल में भी उन्ही आ़दात की मह़ब्बत पैदा होगी।

बेटियों के दिलो दिमाग़ में सुन्नतों की अ़ज़मत और अहमियत भी बिठानी चाहिए। उन्हें येह एह़सास दिलाया जाए कि सुन्नतें मह़ज़ रस्म रवाज या चन्द ज़ाहिरी आमाल का नाम नहीं बल्कि येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी के वोह त़रीक़े हैं जिन पर अ़मल करने से अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत नसीब होती है। जब बच्चियों के दिल में येह जज़्बा पैदा होगा कि मैं अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी सुन्नत पर अ़मल कर रही हूं, तो उन के लिए सुन्नतों पर अ़मल आसान और ख़ुशगवार हो जाएगा।

बेटियों में सुन्नत सीखने का ज़ौक़ पैदा करने के लिए घर में बाक़ाइ़दा सुन्नतों का तज़्किरा होना चाहिए। रोज़ाना या हफ़्तावार चन्द सुन्नतें सीखने का मामूल बनाया जा सकता है और रोज़ पेश आने वाले मुआ़मलात में उन की याद दिहानी कराई जा सकती है। मसलन खाने पीने की सुन्नतें, लिबास की सुन्नतें, सोने जागने की सुन्नतें, सलाम की सुन्नतें, वालिदैन के ह़ुक़ूक़, रिश्तेदारों के साथ ह़ुस्ने सुलूक और दीगर रोज़ मर्रा सुन्नतों के बारे में गुफ़्तगू की जाए।

अगर बेटी कोई नई सुन्नत सीख कर उस पर अ़मल करे तो उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई की जाए और उसे इन्आ़म या तह़सीन के ज़रीए़ मज़ीद शौक़ दिलाया जाए।

सुन्नतों के बारे में मालूमात ह़ासिल करने के लिए मुत़ालए़ की आ़दत पैदा करना भी निहायत ज़रूरी है। बेटियों को बचपन ही से दीनी कुतुब पढ़ने की तरग़ीब दी जाए बिलख़ुसूस मक्तबतुल मदीना की वोह किताबें जिन में सुन्नतों, इस्लामी आदाब, सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इस्लामी अख़्लाक़ियात को आसान अन्दाज़ में बयान किया गया है, मसलन सीरते मुस्त़फ़ा, 550 सुन्नतें और आदाब, जन्नती ज़ेवर, आदाबे दीन और इस्लामी ज़िन्दगी वग़ैरा कुतुब का मुत़ालआ़ करवाया जाए।

माएं ख़ुद भी उन किताबों का मुत़ालआ़ करें और घर में मुत़ालए़ का माह़ौल क़ाइम करें। बच्चियां जब अपनी माओं को दीनी किताबें पढ़ते देखेंगी तो उन के दिल में भी किताब दोस्ती और इ़ल्मे दीन की मह़ब्बत पैदा होगी।

इसी त़रह़ F.G.N. चैनल पर नश्र होने वाले इस्लाह़ी प्रोग्रामों, बिलख़ुसूस "मदनी मुज़ाकरा" से उन का तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना तरबियत के लिए बेह़द मुफ़ीद है। इस सिल्सिले में मुख़्तलिफ़ दीनी, अख़्लाक़ी, मुआ़शरती और तरबियती मौज़ूआ़त को निहायत आसान और दिलनशीन अन्दाज़ में पेश किया जाता है, जिस से बच्चों और बड़ों दोनों को सुन्नतें, आदाबे ज़िन्दगी और इस्लामी तालीमात के बारे में क़ीमती राहनुमाई मिलती है। अगर घर वाले मिल कर मदनी मुज़ाकरा देखें और फिर उस में बयान होने वाली बातों पर आपस में गुफ़्तगू भी करें, तो येह बच्चों की ज़ेहन साज़ी का एक बेहतरीन और मुअस्सिर ज़रीआ़ बन सकता है।

येह इक़्दामात बेटियों की दीनी तरबियत में अहम किरदार अदा करते हैं। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि वोह घर में फ़ुज़ूल और ग़ैर ज़रूरी प्रोग्राम्ज़ के बजाए ऐसे प्रोग्राम्ज़ देखने की आ़दत डालें जिन से दीनी मालूमात, अख़्लाक़ी तरबियत और सुन्नतों की मह़ब्बत ह़ासिल हो।

बेटियों के दिल में मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़ाने के लिए उन्हें सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वाक़िआ़त सुनाए जाएं, दुरूदे पाक पढ़ने की आ़दत डाली जाए, नाते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनने और पढ़ने की तरग़ीब दी जाए और येह समझाया जाए कि सुन्नतों पर अ़मल दरअस्ल रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का अ़मली इज़्हार है। जो जितना ज़ियादा सुन्नतों पर अमल करता है वोह इतना ही रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब हो सकता है।

इसी त़रह़ घर में सुन्नतों का अ़मली माह़ौल बनाय जाए। मसलन घर में आते जाते सलाम, मस्नून दुआ़ओं का एहतिमाम, नमाज़ की अहमियत, बापर्दा रहने की तरग़ीब, सादगी इख़्तियार करना, बड़ों का एह़तिराम, छोटों पर शफ़्क़त, सफ़ाई सुथराई, वक़्त की पाबन्दी, सच्चाई और अमानतदारी जैसे औसाफ़ को रोज़ मर्रा ज़िन्दगी का ह़िस्सा बनाया जाए। इस त़रह़ सुन्नतें सिर्फ़ किताबों तक मह़दूद नहीं रहेंगी बल्कि अ़मली ज़िन्दगी में भी नज़र आएंगी।

याद रखें ! बेटियों की बेहतरीन तरबियत येह नहीं कि उन्हें सिर्फ दुनिया में कामयाब बना दिया जाए बल्कि अस्ल कामयाबी येह है कि उन के दिल में अल्लाह तआ़ला, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क़ुरआने करीम और सुन्नते नबवी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पैदा हो जाए। अगर बेटी सुन्नतों से मह़ब्बत करने वाली, सुन्नतें सीखने वाली और सुन्नतों पर अ़मल करने वाली बन जाए तो वोह अपने लिए, अपने वालिदैन के लिए और पूरी उम्मत के लिए ख़ैरो बरकत का ज़रीआ़ बन सकती है।

लिहाज़ा मांओं को चाहिए कि वोह अपनी बेटियों को सुन्नतों की तालीम दें, सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दें, सुन्नतों की अ़ज़मत उन के दिलों में बिठाएं, दीनी मुत़ालए़ की आ़दत पैदा करें, F.G.N. चैनल और मदनी मुज़ाकरा देखने की तरग़ीब दें, मक्तबतुल मदीना की कुतुब से वाबस्ता करें और उन्हें ऐसे दीनी माह़ौल में परवान चढ़ाएं जहां सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत और उस पर अ़मल ज़िन्दगी का मक़्सद बन जाए। येह तरबियत दुनिया व आख़िरत की ह़क़ीक़ी कामयाबी की ज़ामिन है।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 औरतों का अपने हाथ और पांव के बाल काटना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या औ़रतों के लिए अपने हाथ और पांव के बालों को काटना जाइज़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औ़रत अपने हाथ और पांव के बाल काट सकती है, शरीअ़त में इस की मुमानअ़त नहीं। अलबत्ता अगर येह काम किसी दूसरी औ़रत से करवाया जाए तो पर्दे का ख़याल रखना ज़रूरी है यानी हाथ और घुटनों से नीचे के बाल तो साफ़ करवाना दुरुस्त है लेकिन टांगों के बालों में घुटनों से ऊपर के बाल काटने के लिए उस हिस्से को दूसरी औ़रत के सामने खोलना जाइज़ नहीं, क्यूंकि एक औ़रत का दूसरी औ़रत के सामने भी बग़ैर शरई ज़रूरत के अपने नाफ़ से घुटने तक का हिस्सा खोलना जाइज़ नहीं। इसी त़रह इस काम के लिए किसी ग़ैर मुस्लिम औ़रत के सामने आज़ाए सित्र जैसे कलाइयां, बाज़ू, पिन्डलियां खोलना भी जाइज़ नहीं होगा, क्यूंकि मुसलमान औ़रत का ग़ैर मुस्लिम औ़रत से भी वोही पर्दा होता है जो औ़रत का एक अजनबी मर्द से होता है यानी जिन आज़ा को अजनबी मर्द के सामने खोलना जाइज़ नहीं, उन्ही आज़ा को ग़ैर मुस्लिम औ़रत के सामने भी खोलना जाइज़ नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मख़्सूस अय्याम में इस्तिमाल की गई चीज़ें धोना कैसे ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि औ़रतें मख़्सूस अय्याम में जो चीज़ें इस्तिमाल करती हैं, मख़्सूस अय्याम गुज़र जाने के बाद क्या वोह चीज़ें भी धो कर इस्तिमाल करनी ज़रूरी होंगी मसलन बाल बांधने वाली पोनी, कीचर वग़ैरा। अगर कोई उन्हें बग़ैर धोए इस्तिमाल करे और नमाज़ पढ़े तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में औ़रत हुक्मी त़ौर पर नापाक होती है लेकिन उस का ज़ाहिरी जिस्म बदस्तूर पाक होता है, सिवाए उस मख़्सूस मक़ाम के जहां ख़ून लगा हो कि वोह हिस्सा ज़ाहिरी त़ौर पर भी नापाक होगा। जब औ़रत का अस्ल ज़ाहिर बदन पाक है तो उस ह़ालत में वोह जो कपड़े, बरतन, बिस्तर या दीगर अश्या इस्तिमाल करे, वोह मह़ज़ उस के इस्तिमाल से नापाक नहीं होंगी, बल्कि पाक ही रहेंगी, लिहाज़ा बग़ैर नापाकी के उन्हें धोने की कोई ज़रूरत नहीं और उन के साथ नमाज़ दुरुस्त होगी। अलबत्ता अगर बदन, कपड़ों या किसी और चीज़ पर ह़ैज़ या निफ़ास का ख़ून लग जाए तो वोह जगह नापाक हो जाएगी और जिस क़दर हिस्सा नजासत से आलूदा हुवा हो, उसे पाक करना ज़रूरी होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 नफ़्ल रोज़े में क़ज़ा रोज़े की निय्यत करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन

इस मस्अले के बारे में कि क्या नफ़्ल रोज़े में क़ज़ा शुदा फ़र्ज़ की निय्यत की जा सकती है ? मसलन शाबान के रोज़े में कोई औ़रत जिस के फ़र्ज़ रोज़े बाक़ी हैं वोह नफ़्ल और क़ज़ा दोनों की निय्यत कर ले ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

एक ही रोज़े में नफ़्ल और क़ज़ा दोनों की इकट्ठी निय्यत करना दुरुस्त नहीं, अगर ऐसा किया जाए तो भी वोह रोज़ा क़ज़ा ही की अदाएगी का शुमार होगा, क्यूंकि निय्यत में क़ज़ा को नफ़्ल पर फ़ौक़िय्यत हासिल होती है कि फ़र्ज़ होने की हैसियत से वोह अहम व मुअक्कद है, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में ऐसी औ़रत सिर्फ़ अपने क़ज़ा रोज़े की निय्यत करे और कोशिश कर के जल्द अपने उन रोज़ों को पूरा करे वरना अन्देशा है कि उस के नफ़्ल भी क़बूल नहीं होंगे।

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 नापाकी के अय्याम में आयात को बत़ौरे दुआ़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक ख़ातून की दुआ़ मांगने की यूं आ़दत है कि वोह अपनी दुआ़ में उ़मूमन आयते करीमा ﴿لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنۡتَ سُبۡحٰنَكَ ۖ اِنِّیۡ كُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِیۡنَ﴾ इसी त़रह ﴿حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِیۡلُ﴾ और आख़िर में सूरतुस्साफ़्फ़ात की आख़िरी तीन आयात ﴿سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ ۚ وَسَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۚ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ﴾ पढ़ती है। पूछना येह है कि ख़वातीन के जब नापाकी के दिन हों, तो इन मज़्कूरा आयात को दुआ़ के त़ौर पर पढ़ सकती हैं या नहीं ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

आयते करीमा और सुवाल में बयान कर्दा दीगर आयात दुआ़ के दौरान ख़वातीन अपने मख़्सूस दिनों में पढ़ सकती हैं या नहीं, इस की तफ़्सील येह है कि ह़ालते जनाबत, इसी त़रह ख़वातीन को नापाकी के मख़्सूस दिनों में क़ुरआने पाक की तिलावत करना नाजाइज़ व ह़राम है, लेकिन जो क़ुरआनी आयात ज़िक्रो सना या दुआ़ व मुनाजात के मआ़नी पर मुश्तमिल हों, उन को ज़िक्रो सना और दुआ़ व मुनाजात की निय्यत से पढ़ना जाइज़ है, क्यूंकि उन में निय्यत की तब्दीली की वजह से हुक्म तब्दील हो जाता है और दुआ़ मांगते हुए उ़मूमन ज़िक्रो सना और दुआ़ व मुनाजात के त़ौर पर ही येह आयात पढ़ी जाती हैं, लिहाज़ा ख़वातीन अपने मख़्सूस दिनों में दुआ़ मांगते हुए आयती करीमा, ﴿لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنۡتَ سُبۡحٰنَكَ ۖ اِنِّیۡ كُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِیۡنَ﴾ ﴿حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِیۡلُ﴾ और सूरतुस्साफ़्फ़ात की आख़िरी तीन आयात ﴿سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ ۚ وَسَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۚ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ﴾ दुआ़ व सना की निय्यत से पढ़ सकती हैं और अगर आयात की तिलावत की निय्यत हुई तो ह़राम है।

नोट : वोह आयात कि जिन में ज़िक्रो सना का माना नहीं पाया जाता, उन में निय्यत की तब्दीली फ़ायदा नहीं देगी, इस लिए ऐसी आयात मख़्सूस दिनों में ज़िक्रो सना की निय्यत से भी पढ़ने की इजाज़त नहीं है, इसी त़रह ज़िक्रो सना और दुआ़ व मुनाजात के मआ़नी पर मुश्तमिल आयात किसी मक़्सद के ह़ुसूल, या किसी अ़मल के लिए बत़ौरे वज़ीफ़ा पढ़ने की इजाज़त नहीं है, जैसा कि किसी ख़ास मक़्सद के ह़ुसूल के लिए आयते करीमा या ﴿حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِیۡلُ﴾ का मख़्सूस तादाद में वज़ीफ़ा किया जाता है, तो इस निय्यत से ज़िक्रो सना वाली आयात भी नहीं पढ़ी जा सकतीं। नीज़ जिन लोगों को औ़रत का मख़्सूस ह़ालत में होना मालूम हो, तो बेहतर है कि उन के सामने ज़िक्रो सना वाली आयात बत़ौरे ज़िक्रो सना पढ़ने से बचा जाए, क्यूंकि ऐसी सूरत में अन्देशा है कि कहीं वोह लोग बह़ालते ह़ैज़ व निफ़ास तिलावते क़ुरआन को जाइज़ न समझ लें, या इस पढ़ने वाली औ़रत पर गुनाह की तोहमत न लगा दें।

وَاللہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रबीउ़ल अव्वल के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़/माह/सिन	नाम/वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
5 रबीउ़ल अव्वल 50 हि.	यौमे शहादत : नवासए रसूल, ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि. और **"इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात"**
10 रबीउ़ल अव्वल 10 हि.	यौमे विसाल : शहज़ादए रसूल ह़ज़रत इब्राहीम رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1440 हि., और **"सीरते मुस्तफ़ा, सफ़ह़ा 688"**
12 रबीउ़ल अव्वल 241 हि.	यौमे विसाल : ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि, और **"फ़ैज़ाने इमाम अह़मद बिन ह़म्बल"**
13 रबीउ़ल अव्वल 227 हि.	यौमे उ़र्स : मश्हूर वलियुल्लाह ह़ज़रते बिशर हाफ़ी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.
14 रबीउ़ल अव्वल 94 हि.	यौमे विसाल : असीरे करबला ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि, और **"इरशादाते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन"**
14 रबीउ़ल अव्वल 179 हि.	यौमे विसाल : मालिकियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि, और **"इमाम मालिक का इ़श्क़े रसूल"**
17 रबीउ़ल अव्वल 1235 हि.	यौमे उ़र्स : शाह आले अह़मद अच्छे मियां मारहरवी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.
21 रबीउ़ल अव्वल 1052 हि.	यौमे विसाल : ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि. और 1440 हि.
22/27 रबीउ़ल अव्वल 656 हि.	यौमे उ़र्स : मुह़युद्दीन अबू नस्र मुह़म्मद जीलानी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.
रबीउ़ल अव्वल 12 हि.	जंगे यमामा : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त में नुबुव्वत के झूटे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग हुई जिस में 1200 सह़ाबए किराम शहीद हुए और अल्लाह पाक ने मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई।	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि. और **"फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, सफ़ह़ा 381 ता 390"**
रबीउ़ल अव्वल 50 हि.	विसाले मुबारका : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी जुवैरिया رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल अव्वल 1439 हि. 1441 हि. और **"फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"**

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुल्क़ (यानी अख़्लाक़ो आ़दात) के बारे में जब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا से पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन था। (مشکاۃ المصابیح، 1/247، حدیث: 1257 ملخصاً، مرقاۃ المفاتیح، 3/329، تحت الحدیث: 1257 ملخصاً) रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ुस्ने अख़्लाक़ की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिए : ❁ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم झगड़े, तकब्बुर और बेकार बातों से ख़ुद को बचा कर रखते ❁ आने वालों को मह़ब्बत देते, ऐसी कोई बात या काम न करते जिस से नफ़रत पैदा हो बल्कि नर्मी, शफ़्क़त और मेहरबानी फ़रमाते ❁ जब कहीं तशरीफ़ ले जाते तो जहां जगह होती वहीं बैठ जाते ❁ जब किसी से हाथ मिलाते तो अपना हाथ खींचने में पहल न फ़रमाते ❁ बुराई का बदला बुराई से देने के बजाए मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते बल्कि दीने इस्लाम की 23 साल की दावत के दौरान आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत ही ज़ियादा मुश्किलों और मुसीबतों का सामना किया मगर हमेशा अपने ऊपर ज़ुल्मो सितम करने वालों को मुआ़फ़ ही किया और अपनी ज़ात के लिए कभी इन्तिक़ाम न लिया ❁ बच्चों के साथ मह़ब्बत फ़रमाते और उन पर ज़ियादा रह़म फ़रमाते ❁ कभी किसी बच्चे को डांटा और न बेइ़ज़्ज़ती की ❁ कोई सुवाल करता तो मना न फ़रमाते ❁ लोगों से बोझ को कम और उन की मुश्किलों को ह़ल कर के उन्हें आसानी और सहूलत फ़राहम करते ❁ बेवाओं, यतीमों की देख भाल और बीमारों की ख़बर गीरी करते ❁ ग़रीबों को इ़ज़्ज़त देते और उन से मह़ब्बत करते ❁ पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करते ❁ अच्छे कामों पर लोगों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते ❁ मुआ़शरती हम आहंगी, लोगों के बाहमी तअ़ल्लुक़ात को बरक़रार रखने, मुसलमानों को मुत्तह़िद करने और उन के दरमियान नफ़रतों को मिटाने की कोशिश फ़रमाते ❁ नस्ल, क़ौम या रंग की वजह से किसी से इम्तियाज़ी सुलूक न फ़रमाते बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारा रब एक है और तुम्हारे वालिद एक हैं (यानी ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام), सुन लो ! किसी अ़रबी को अ़जमी पर, किसी अ़जमी को अ़रबी पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं अलबत्ता जो परहेज़गार है वोह दूसरों से अफ़्ज़ल है, बेशक अल्लाह पाक की बारगाह में तुम में से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।" (شعب الایمان، 4/289، حدیث: 5137) ❁ जानवरों को वक़्त पर चारा पानी देने की लोगों को तरग़ीब इरशाद फ़रमाते और उन बेज़बानों को ज़रर (यानी तक्लीफ़) पहुंचाने या उन के साथ बुरा सुलूक करने पर लोगों को तम्बीह (यानी ख़बरदार) फ़रमाते ❁ जिस जहालत भरे दौर में औ़रतों को कोई मक़ामो मरतबा न दिया जाता और बेटियों को अपने लिए बदनुमा दाग़ तसव्वुर किया जाता था ऐसे वक़्त में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने औ़रतों के ह़ुक़ूक़ का तह़फ़्फ़ुज़ फ़रमाया और अपने आला किरदार व पाकीज़ा तालीमात से उन के मक़ाम और मर्तबे को वाज़ेह किया। अल्लाह करीम हमें रसूलुल्लाह के पाकीज़ा अख़्लाक़ व औसाफ़ को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाह़ी (Reformatory), फ़लाह़ी (Welfare) रूह़ानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है